CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2004 with Solution PDF-Set 2/1/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 6, 9, 13 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

एक दिन तने ने भी कहा था,
जड़ ?
जड़ तो जड़ ही है;
जीवन से सदा डरी रही है,
और यही है उसका सारा इतिहास
कि ज़मीन में मुँह गड़ाए पड़ी रही है;
लेकिन मैं ज़मीन से ऊपर उठा,
बाहर निकला,
बढ़ा हूँ,
मज़बूत बना हूँ,
इसी से तो तना हूँ ।

[7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और कविता का परिचय, प्रसंग, भावार्थ तथा काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- वृक्ष के अंगों का संवाद मानव-जीवन के अहंकार और अपनी आधारभूत शक्ति के प्रति कृतघ्नता को व्यक्त करता है।

चरण 1: प्रसंग स्पष्ट कीजिए प्रस्तुत काव्यांश हरिवंश राय बच्चन की कविता 'जड़ की मुसकान' से लिया गया है। इसमें वृक्ष का तना जड़ को हीन समझते हुए अपनी ऊँचाई, वृद्धि और मजबूती का बखान करता है। कवि ने वृक्ष के अंगों के माध्यम से उस मानवीय प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है जिसमें व्यक्ति अपनी उपलब्धियों पर गर्व करते हुए उनके वास्तविक आधार को भूल जाता है।

चरण 2: तने की दृष्टि से भावार्थ समझिए तना उपेक्षा से प्रश्न करता है कि जड़ की क्या महत्ता है। उसके अनुसार जड़ अचेतन और निष्क्रिय है। वह जीवन की चुनौतियों से सदा डरती रही और धरती में मुँह छिपाकर पड़ी रही। इसके विपरीत तना स्वयं को साहसी समझता है, क्योंकि वह जमीन के ऊपर निकला, बढ़ा और मजबूत हुआ। वह अपनी बाहरी ऊँचाई को श्रेष्ठता का प्रमाण बनाकर कहता है कि इसी कारण वह तना है। उसके कथन में आत्मप्रशंसा और जड़ के प्रति अवज्ञा है।

चरण 3: अंतर्निहित व्यंग्य खोलिए तने का निर्णय एकांगी है। जमीन के भीतर रहकर जड़ ही वृक्ष को जल, पोषण और स्थिरता देती है। उसका छिपा रहना भय या निकम्मेपन का चिह्न नहीं, जीवन को सँभालने का मौन श्रम है। तना जिस विकास को अपना अकेले का पराक्रम समझ रहा है, वह जड़ के सहारे ही संभव हुआ है। अतः इन पंक्तियों को कवि का सीधा मत नहीं मानना चाहिए; वे अहंकारी तने की मानसिकता दिखाती हैं। कवि अप्रत्यक्ष रूप से विनम्रता और अपने आधार के प्रति कृतज्ञता का महत्त्व सामने लाता है।

चरण 4: काव्यगत विशेषताएँ पहचानिए तने को बोलते और गर्व करते दिखाने में मानवीकरण है। 'जड़' शब्द वनस्पति के मूल और चेतनाहीनता, दोनों अर्थों की ओर संकेत करके व्यंग्य को तीखा करता है। 'तना' वृक्ष के अंग के साथ तनकर खड़े होने का भाव भी जगाता है। सरल खड़ी बोली, संवादात्मक शैली, मुक्त छंद और छोटी-बड़ी पंक्तियों का क्रम तने के आत्मप्रदर्शन को प्रभावपूर्ण बनाते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष काव्यांश बाहरी सफलता के अहंकार पर व्यंग्य करता है और सफलता के पीछे काम करने वाले मौन आधार की गरिमा का बोध कराता है।

त्वरित सुझाव: पहले तने के दावे लिखिए, फिर जड़ की वास्तविक भूमिका बताइए; इससे वक्ता के अहंकार और कवि के संदेश का अंतर स्पष्ट रहेगा।

1(ख). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

फ़सलें उगतीं, फ़सलें कटतीं लेकिन धरती चिर उर्वर है ।

सौ बार बने सौ बार मिटे लेकिन मिट्टी अविनश्वर है ।

मिट्टी गल जाती पर उसका विश्वास अमर हो जाता है ! [7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में पंक्तियों का भाव, प्रतीकों का आशय तथा भाषा और शिल्प की विशेषताएँ बताना आवश्यक है।
- मिट्टी जीवन की सृजनशीलता, धरती की उर्वरता और नष्ट होकर भी बनी रहने वाली जीवन-शक्ति का प्रतीक है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग बताइए प्रस्तुत पंक्तियाँ शिवमंगल सिंह 'सुमन' की कविता 'मिट्टी की महिमा' से ली गई हैं। कवि मिट्टी की अक्षय सृजन-शक्ति का गुणगान करते हुए बताता है कि उससे उत्पन्न रूप बदलते और नष्ट होते रहते हैं, पर जीवन को जन्म देने वाली उसकी क्षमता समाप्त नहीं होती। इस प्रसंग में व्यक्तिगत विनाश के बीच सामूहिक जीवन की निरंतरता का विश्वास व्यक्त हुआ है।

चरण 2: धरती और फसलों का संबंध समझिए खेतों में फसलें उगती हैं और पकने पर कट जाती हैं। किसी एक फसल का अंत हो जाने से धरती बाँझ नहीं हो जाती; वह अगली फसल को जन्म देने की क्षमता बनाए रखती है। 'चिर उर्वर' का अर्थ है लंबे समय तक सृजन और पोषण करने वाली शक्ति। कवि का ध्यान क्षणिक उपज की अपेक्षा उस स्थायी आधार पर है जिससे बार-बार नया जीवन संभव होता है।

चरण 3: मिटने और अमर होने का भाव स्पष्ट कीजिए मिट्टी से अनेक रूप बनते हैं और वे बार-बार मिट भी जाते हैं, किंतु मिट्टी का मूल अस्तित्व और उसकी सृजनशीलता बनी रहती है। 'सौ बार' की आवृत्ति अनगिनत निर्माण और विनाश की ओर संकेत करती है। अंतिम पंक्ति में मिट्टी का गल जाना त्याग और आत्मविसर्जन का बिंब है। वह अपना रूप खोकर भी नए जीवन को पोषण देती है। इसीलिए उसका विश्वास अमर होता है: जीवन को आगे बढ़ाने की आशा उसके रूप के मिटने पर भी समाप्त नहीं होती। यह निष्क्रिय भाग्यवाद नहीं, निरंतर निर्माण और आत्मदान में आस्था है।

चरण 4: काव्य-सौंदर्य बताइए फसल और धरती के परिचित ग्रामीण बिंब विचार को सहज बनाते हैं। 'उगतीं-कटतीं', 'बने-मिटे' और 'गल जाती-अमर' जैसे विरोधी भाव सृजन-विनाश के चक्र को उभारते हैं। मिट्टी को विश्वास से युक्त बताने में मानवीकरण है। 'सौ बार' की पुनरावृत्ति कथन को बल देती है। सहज भाषा, लयात्मकता और ओजपूर्ण कथन जीवन के प्रति आशावादी दृष्टि को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष कवि मिट्टी की अटूट सृजनशीलता और त्याग की महिमा बताते हुए विनाश के बीच भी जीवन, निर्माण और आशा की निरंतरता में विश्वास जगाता है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या का क्रम फसल का क्षय, धरती की उर्वरता और मिट्टी का आत्मदान रखिए; अंतिम पंक्ति को इसी क्रम से जोड़कर समझाइए।

1(ग). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

देह से अकेला होकर भी
मैं दो हूँ
मेरे पेट में पिद्दू है ।
जब मैं दफ़्तर में
साहब की घंटी पर उठता-बैठता रहता हूँ,
मेरा पिद्दू
नदी किनारे वंशी बजाता रहता है !
जब मेरी 'नोटिंग' कट-कुट कर 'टाइप' होती है
तब साप्ताहिक के मुख पृष्ठ पर
मेरे पिद्दू की तस्वीर छपती है !

[7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की व्याख्या में उसके शब्दों और स्थितियों से बाहरी जीवन तथा भीतरी आकांक्षाओं का संबंध समझना चाहिए।
- यहाँ 'पिद्दू' वक्ता के भीतर सक्रिय स्वतंत्र, कल्पनाशील और कलात्मक व्यक्तित्व का प्रतीक है।

चरण 1: प्रसंग स्पष्ट कीजिए प्रस्तुत काव्यांश में वक्ता अपनी एक देह के भीतर दो भिन्न जीवनों का अनुभव व्यक्त करता है। एक ओर वह दफ्तर में अधिकारी के आदेशों का पालन करने वाला कर्मचारी है, दूसरी ओर उसके भीतर स्वतंत्र सृजनशील चेतना जीवित है। यह प्रसंग नौकरी की बँधी हुई दिनचर्या और व्यक्ति की मुक्त कलात्मक आकांक्षाओं के द्वंद्व को सामने लाता है।

चरण 2: एक देह में दो होने का आशय समझिए वक्ता का 'मैं दो हूँ' कहना शारीरिक रूप से दो मनुष्य होने का दावा नहीं है। वह अपने व्यावहारिक और कल्पनाशील व्यक्तित्व के भेद को व्यक्त करता है। भीतर का 'पिद्दू' उसके मन की उस ऊर्जा का नाम है जिसे कार्यालय का अनुशासन पूरी तरह बाँध नहीं पाता। पेट में उसके होने का उल्लेख इस आंतरिक सत्ता को मूर्त और आत्मीय बनाता है।

चरण 3: दफ्तर और नदी के बिंबों का अर्थ खोलिए दफ्तर में साहब की घंटी पर उठना-बैठना निर्भरता, आदेशपालन और यांत्रिक दिनचर्या का सूचक है। उसी समय पिद्दू का नदी किनारे वंशी बजाना खुली प्रकृति, आनंद और कलात्मक स्वतंत्रता का बिंब है। शरीर आदेशों में बँधा है, पर मन अपनी स्वतंत्र दुनिया रचता रहता है। नदी और वंशी के साथ रखा गया कार्यालय का वातावरण इस द्वंद्व को तीव्र करता है।

चरण 4: नोटिंग और मुखपृष्ठ के विरोध को समझिए वक्ता की कार्यालयी नोटिंग कटती-छँटती है और फिर टाइप होती है; वहाँ उसका लिखा दूसरे की स्वीकृति और संशोधन के अधीन है। इसके विपरीत साप्ताहिक के मुखपृष्ठ पर पिद्दू की तस्वीर छपना भीतर के स्वतंत्र व्यक्तित्व की सार्वजनिक पहचान को सूचित करता है। कार्यालय में सीमित भूमिका वाला व्यक्ति अपने रचनात्मक रूप में अलग प्रतिष्ठा पा सकता है। इन पंक्तियों का बल बाहरी दीनता और भीतरी सर्जनात्मक सामर्थ्य के विरोध पर है।

चरण 5: अभिव्यक्ति की विशेषताएँ बताइए बोलचाल की भाषा तथा 'दफ्तर', 'साहब', 'नोटिंग' और 'टाइप' जैसे शब्द आधुनिक कार्यालयी परिवेश रचते हैं। मुक्त छंद और संवाद जैसी कथन-भंगिमा अनुभव को सहज बनाती है। 'मैं' और 'पिद्दू' का विभाजन प्रतीकात्मक है, जबकि घंटी तथा वंशी के विपरीत बिंब बंधन और स्वातंत्र्य को मूर्त करते हैं। पूरे कथन में हल्का हास्य और व्यवस्था पर व्यंग्य भी उपस्थित है।

चरण 6: निष्कर्ष काव्यांश बताता है कि जीविका की पराधीन दिनचर्या के भीतर भी स्वतंत्र, आनंदमय और सृजनशील व्यक्तित्व सक्रिय रह सकता है।

त्वरित सुझाव: हर जोड़ी को साथ रखकर अर्थ लिखिए: घंटी और वंशी, कटी नोटिंग और मुखपृष्ठ; इन्हीं विरोधों से दो व्यक्तित्वों का भाव स्पष्ट होता है।

2(क). नीचे लिखे काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

"तुम हो महान
तुम सदा हो महान,"
है नश्वर यह दीनभाव
कायरता कामपरता,
ब्रह्म हो तुम पदरज भर भी है नहीं,
पूरा यह विश्वभार —
जागो फिर एक बार ।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौन्दर्य में भाव-सौन्दर्य और शिल्प-सौन्दर्य, दोनों स्पष्ट किए जाते हैं। भाव के साथ शब्द, ध्वनि, शैली और काव्यगत विशेषताओं का संबंध दिखाना आवश्यक है।
- इस अंश का केंद्रीय भाव मनुष्य की आत्मशक्ति और गरिमा का बोध कराकर दीनता, कायरता तथा इंद्रियासक्ति से उसे मुक्त करना है।

चरण 1: भाव-सौन्दर्य और प्रेरणा कवि मनुष्य को उसकी महानता की याद दिलाते हैं। वह स्वभावतः महान और असीम शक्ति वाला है; दीनता, कायरता और कामपरता उसकी स्थायी पहचान नहीं, नष्ट होने वाली दुर्बल अवस्थाएँ हैं। इसलिए उसे स्वयं को हीन समझकर निष्क्रिय नहीं रहना चाहिए। 'ब्रह्म हो तुम' कहकर कवि उसके भीतर की व्यापक चेतना और सामर्थ्य को जगाते हैं। 'पूरा यह विश्वभार' भी उसके लिए पाँव की धूल जितना नहीं है—इस कथन में उसकी शक्ति के प्रति प्रबल विश्वास व्यक्त हुआ है। अंतिम पुकार 'जागो फिर एक बार' आत्मगौरव को कर्म और जागरण में बदलने का आह्वान करती है।

चरण 2: भाषा, अलंकार और शैली भाषा ओजपूर्ण, उद्बोधनात्मक और संस्कृतनिष्ठ है। 'महान', 'नश्वर', 'दीनभाव', 'ब्रह्म' तथा 'विश्वभार' जैसे शब्द कथन को गंभीरता देते हैं। 'तुम हो महान / तुम सदा हो महान' की पुनरावृत्ति मनुष्य की गरिमा पर बल डालती है और विश्वासपूर्ण लय बनाती है। 'ब्रह्म हो तुम' में मनुष्य पर ब्रह्म का आरोप होने से रूपक की छटा है। विश्वभार को पदरज से भी तुच्छ बताने में अतिशयोक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति शक्ति की विराटता उभारती है। अलग-अलग लंबाई की पंक्तियाँ मुक्तछंद की स्वाभाविक गति देती हैं; संबोधन और आज्ञार्थक 'जागो' पाठक को सीधे सक्रिय करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अंश का सौन्दर्य आत्महीनता के विरोध और आत्मशक्ति के ओजस्वी उद्घोष में है। प्रभावशाली पुनरावृत्ति, रूपक, अतिशयोक्तिपूर्ण कथन और सीधा उद्बोधन जागरण के संदेश को सशक्त बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: 'महान', 'ब्रह्म' और 'जागो' को आधार बनाकर भाव समझाएँ; फिर प्रत्येक शिल्पगत विशेषता के साथ उसी अंश का शब्द या पंक्ति दें।

2(ख). नीचे लिखे काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

कीच, धूल, गंदगी बदन पर
लेकर ओ मेहनतकश !
गाता फिरे विश्व में भारत
तेरा ही नव-श्रम-यश !
तेरी एक मुस्कराहट पर
वीर पीढ़ियाँ फूलें ।
ये अनाज की पूलें
तेरे काँधे झूलें ।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में श्रमिक के जीवन और श्रम की महत्ता का चित्रण है। काव्य-सौन्दर्य समझाते समय दृश्य-चित्र, संबोधन, शब्दों की लय तथा उनके भावात्मक प्रभाव को साथ रखना चाहिए।
- श्रम से उपजी धूल और गंदगी यहाँ हीनता नहीं, सृजन और समाज के भरण-पोषण में लगे व्यक्ति की कर्मशीलता का संकेत हैं।

चरण 1: श्रम का सम्मान और भाव-सौन्दर्य कवि मेहनतकश को आत्मीय और सम्मानपूर्ण संबोधन देते हैं। उसके शरीर पर कीचड़, धूल और गंदगी है, क्योंकि वह कठिन श्रम करता है। कवि की दृष्टि बाहरी मैल पर नहीं, उस श्रम की महानता पर है। भारत को संसार में उसी श्रमिक के नए श्रम-यश का गायक बनना चाहिए। इससे श्रमिक के योगदान को राष्ट्रीय गौरव का आधार बनाया गया है। उसकी मुस्कराहट में आने वाली वीर पीढ़ियों के विकास और उत्साह की संभावना दिखाई गई है। कंधों पर झूलती अनाज की पूलें कृषि-श्रम का सजीव दृश्य प्रस्तुत करती हैं और बताती हैं कि समाज का अन्न तथा जीवन उसके परिश्रम पर निर्भर है।

चरण 2: बिंब, भाषा और लय का सौन्दर्य 'कीच, धूल, गंदगी बदन पर' श्रम करते व्यक्ति का प्रत्यक्ष दृश्य-बिंब रचता है। 'अनाज की पूलें' और 'काँधे झूलें' से फसल उठाए श्रमिक की गतिशील छवि उभरती है। 'भारत' को श्रम-यश गाते हुए प्रस्तुत करने में मानवीकरण की छटा है। 'वीर पीढ़ियाँ फूलें' में फूलने का प्रयोग बढ़ने, विकसित होने और समृद्ध होने के अर्थ में हुआ है। 'मेहनतकश' और 'काँधे' जैसे प्रचलित शब्द भाषा को सहज तथा जनजीवन से जुड़ा बनाते हैं। 'फूलें', 'पूलें', 'झूलें' की तुक और छोटी पंक्तियों की गेय लय आनंद, आशा और उत्साह बढ़ाती है। विस्मयादिबोधक संबोधन श्रमिक के प्रति आदर को मुखर करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस काव्यांश में श्रमिक की कर्मशीलता, राष्ट्रीय योगदान और उज्ज्वल भविष्य का सुंदर समन्वय है। सजीव श्रम-बिंब, आत्मीय संबोधन तथा गेय तुकें श्रम की प्रतिष्ठा को प्रभावपूर्ण बनाती हैं।

त्वरित सुझाव: श्रमिक के शरीर की धूल को उसकी हीनता न बताएँ; उसे श्रम के दृश्य से जोड़ें और 'फूलें-पूलें-झूलें' की लय का प्रभाव स्पष्ट करें।

2(ग). नीचे लिखे काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

ऐसे आओ
जैसे गिरि के शृंग शीश पर
रंग-रूप का क्रीट लगाए
बादल आए
हंस-माल-माला लहराए
और शिला-तन —
कान्ति निकेतन-तन बन जाए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्राकृतिक दृश्य के माध्यम से किसी के आगमन की सुंदरता और परिवर्तनकारी प्रभाव की अभिव्यक्ति इस काव्यांश का आधार है। भाव और शिल्प को मुद्रित पंक्तियों के साक्ष्य से स्पष्ट करना चाहिए।
- पर्वत, बादल, हंस-माला और शिला का दृश्य एक साथ ऊँचाई, रंग, गति और चमक का सौन्दर्य रचता है।

चरण 1: आगमन की कामना और प्राकृतिक सौन्दर्य कवि ऐसा आगमन चाहते हैं जो साधारण या निष्प्रभ न होकर प्रकृति के भव्य दृश्य जैसा सुंदर और प्रभावशाली हो। पर्वत के ऊँचे शिखर पर रंग-रूप का मुकुट लगाए बादल का आना इस कामना का सुंदर उदाहरण है। बादलों की उपस्थिति से शिखर सजा हुआ प्रतीत होता है; हंस-माला का लहराना दृश्य में गति, कोमलता और आकर्षण जोड़ता है। आगमन का प्रभाव इतना उज्ज्वल हो कि कठोर, निर्जीव-सा शिला-तन भी कांति का निवास बन जाए। इस प्रकार अंश में सौन्दर्य के ऐसे प्रभाव की कामना है जो रूखेपन और जड़ता को भी दीप्ति से भर दे।

चरण 2: उपमा, रूपक और चित्रात्मक भाषा 'ऐसे आओ / जैसे' में आगमन की तुलना पर्वत पर बादलों के आने से की गई है; अतः उपमा का सुंदर प्रयोग है। पर्वत के शृंग को शीश और रंग-रूप को किरीट की तरह प्रस्तुत करने से दृश्य में रूपकात्मकता आती है। 'शिला-तन' तथा 'कान्ति निकेतन-तन' कठोरता और दीप्ति का प्रभावशाली अंतर सामने रखते हैं। बादल का मुकुट धारण करके आना प्रकृति को मानवीय रूप भी देता है। 'गिरि', 'शृंग', 'शिला', 'कान्ति' और 'निकेतन' जैसे संस्कृतनिष्ठ शब्द भव्यता उत्पन्न करते हैं। 'आओ', 'आए', 'लहराए', 'जाए' की ध्वनियाँ पंक्तियों को प्रवाह और संगीत देती हैं। दृश्य-बिंब में रंग और चमक के साथ लहराने की क्रिया जुड़कर पूरे चित्र को जीवंत बना देती है।

चरण 3: निष्कर्ष अंश का भाव-सौन्दर्य जीवन में दीप्ति और सौन्दर्य भरने वाले आगमन की कामना है। उपमा, रूपकात्मक प्राकृतिक चित्र, संस्कृतनिष्ठ भाषा और प्रवाहपूर्ण ध्वनि-संयोजन इस कामना को मोहक रूप देते हैं।

त्वरित सुझाव: 'जैसे' से बनी तुलना पहले पहचानें; फिर पर्वत-शीश, रंग-रूप के मुकुट और शिला में आती कांति को भाव तथा शिल्प से जोड़ें।

3(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

"काहे रे बन खोजन जाई" पद में गुरु नानक ईश्वर की अंतर्मुखी खोज पर बल क्यों देना चाहते हैं ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ईश्वर सर्वव्यापक है; उसे केवल वन अथवा किसी बाहरी स्थान में सीमित मानना उचित नहीं है।
- पद में पुष्प की सुगंध और दर्पण के प्रतिबिंब के उदाहरण आत्मा में परमात्मा की उपस्थिति समझाते हैं।

चरण 1: पद के उदाहरण का आशय फूल में सुगंध उसी के भीतर रहती है। इसी प्रकार दर्पण में दिखाई देने वाला प्रतिबिंब उससे अलग किसी दूर स्थान में नहीं है। इन उदाहरणों से गुरु नानक समझाते हैं कि ईश्वर को पाने के लिए मनुष्य को वन में भटकने की आवश्यकता नहीं है। अपने हृदय में विद्यमान सत्य को पहचानने के लिए मन को अंतर्मुख करना चाहिए।

चरण 2: अंतर्मुखता और संसार का संबंध अंतर्मुखी खोज का अर्थ संसार से भाग जाना नहीं, बल्कि अपने भीतर की चेतना को पहचानना है। वन में जाने पर भी यदि मनुष्य ईश्वर को अपने से सर्वथा अलग मानता रहे, तो उसका भ्रम दूर नहीं होगा। ईश्वर भीतर और बाहर एक ही रूप में व्याप्त है; इसलिए खोज की दिशा को बदलना आवश्यक है। गुरु की शिक्षा इस सत्य को समझने और अज्ञान का पर्दा हटाने में सहायता करती है। उत्तर में केवल बाहरी खोज का निषेध न लिखकर यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि आत्मचिंतन से उसी परमात्मा की अनुभूति होती है जो समस्त जगत में व्याप्त है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर गुरु नानक के अनुसार ईश्वर सर्वव्यापक है और प्रत्येक मनुष्य के हृदय में विद्यमान है। जैसे पुष्प में सुगंध और दर्पण में प्रतिबिंब रहता है, वैसे ही परमात्मा हमारे भीतर है। अतः उसे वन में खोजने के बजाय आत्मचिंतन से पहचानना चाहिए। बाहरी भटकाव छोड़कर अंतर्मुख होने पर ईश्वर की अनुभूति होती है और अज्ञान का भ्रम मिटता है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः ईश्वर की निकटता और सर्वव्यापकता का बोध कराने के लिए गुरु नानक अंतर्मुखी खोज पर बल देते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सर्वव्यापकता के साथ पुष्प-सुगंध तथा दर्पण-प्रतिबिंब के उदाहरण का संबंध आत्मचिंतन से जोड़िए।

3(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

"आज पहली बार" कविता में हवा और कवि के जीवनानुभव एक होते हुए भी जीवन के प्रति दृष्टिकोणों में क्या भिन्नता है ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता समान दुःखद अनुभवों के प्रति कवि और हवा की भिन्न प्रतिक्रियाओं को सामने रखती है।
- हवा पराजय, भटकाव और अकेलेपन को शीतलता, गति तथा व्यापक आत्मीयता में बदलती है।

चरण 1: समान अनुभवों की भिन्न परिणति कवि और हवा दोनों ने पराजय, भटकाव तथा अकेलेपन को अनुभव किया है। कवि का तपता मस्तक उसकी मानसिक पीड़ा का संकेत है। वह अपने दुःख में घिरा है। दूसरी ओर हवा पराजय से शीतल होती है और भटकाव से आगे बढ़ना सीखती है। किसी एक का सहारा न मिलने पर वह सबसे अपनापन जोड़ती है और स्वयं को सबमें बाँटती है।

चरण 2: हवा से कवि को मिलने वाली प्रेरणा हवा अपने दुःखों को नकारती नहीं है; वह उन्हें स्वीकार करके उनसे नई जीवनशक्ति अर्जित करती है। इसलिए उसका आशावाद अनुभवहीन कल्पना नहीं, विपरीत परिस्थितियों से निकला हुआ बोध है। उसका अपने को बाँटना उदारता और दूसरों से जुड़ने की प्रवृत्ति प्रकट करता है। हवा का स्नेह कवि को फिर खड़ा होने की प्रेरणा देता है। उसके दुःख का व्यापक होना निजी वेदना से आगे बढ़कर दूसरों की पीड़ा से जुड़ने का संकेत है। इस परिवर्तन से स्पष्ट होता है कि अनुभवों से अधिक महत्त्व उन्हें देखने और जीवन में अपनाने के ढंग का है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि और हवा दोनों पराजय, भटकाव तथा अकेलेपन से गुजरे हैं। कवि इन अनुभवों से व्यथित और निराश है, जबकि हवा ने पराजय से शीतलता तथा भटकाव से गति पाई है। अपना कोई न होने पर उसने सबको अपना बना लिया है। उसका उदार, सकारात्मक दृष्टिकोण कवि को दुःख से उबरकर व्यापक जीवन से जुड़ने की प्रेरणा देता है।

चरण 4: निष्कर्ष हवा की स्वीकारशील, गतिशील और परोपकारी दृष्टि कवि की निजी पीड़ा में सिमटी दृष्टि का विस्तार करती है।

त्वरित सुझाव: पराजय-शीतलता, भटकाव-गति और अकेलापन-सबसे आत्मीयता की तीन जोड़ियाँ बनाकर दोनों दृष्टियों का अंतर स्पष्ट कीजिए।

3(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

"वीरांगना" कविता में कवि ने नारी के किन-किन रूपों को प्रस्तुत किया है, और उनकी तुलना लोहे से क्यों की है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- केदारनाथ अग्रवाल ने नारी की संघर्षशील शक्ति को लोहे के तपने, गलने और ढलने के बिंबों से व्यक्त किया है।
- गोली की गति का बिंब नारी के साहस और निर्णायक प्रतिरोध को सामने लाता है।

चरण 1: नारी के रूप और लोहे का बिंब कविता में नारी जीवन की कठिनाइयाँ सहने वाली, संवेदनशीलता के कारण पिघलने वाली तथा बदलती परिस्थितियों के अनुसार ढलने वाली दिखाई देती है। उसे केवल असहाय या कोमल नहीं माना गया है। वह आवश्यकता पड़ने पर अन्याय का सामना करने वाली वीरांगना भी है। लोहे के विभिन्न रूप उसकी सहनशक्ति और अनेक परिस्थितियों में सक्रिय बने रहने की क्षमता समझाते हैं।

चरण 2: तुलना का समग्र आशय तपना जीवन की कठिन परीक्षाओं का, गलना भीतर की कोमलता और संवेदना का तथा ढलना परिस्थिति के अनुसार नया रूप लेने का संकेत है। इन क्रियाओं के बाद गोली की तरह चलने का बिंब कविता को सक्रिय प्रतिरोध तक पहुँचाता है। अतः लोहे से तुलना का अर्थ नारी को भावहीन या केवल कठोर बताना नहीं है। उसमें दूसरों के दुःख से द्रवित होने की क्षमता और अन्याय के सामने अडिग रहने का साहस साथ-साथ हैं। कविता इन परस्पर पूरक गुणों को एक ही नारी में दिखाकर उसके सामर्थ्य और आत्मसम्मान को प्रतिष्ठित करती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि ने नारी को संघर्ष में तपने वाली, संवेदना से पिघलने वाली, परिस्थितियों के अनुसार ढलने वाली और अन्याय के विरुद्ध गोली की तरह चलने वाली वीरांगना के रूप में प्रस्तुत किया है। लोहे की तरह वह कष्ट सहकर उपयोगी रूप ग्रहण करती है। उसकी दृढ़ता, सहनशीलता और प्रतिरोध की शक्ति के कारण कवि ने उसकी तुलना लोहे से की है।

चरण 4: निष्कर्ष लोहे का बिंब नारी की दृढ़ता के साथ उसकी संवेदनशीलता, अनुकूलनशीलता और संघर्षशील सक्रियता को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: तपना, गलना, ढलना और गोली की तरह चलना—इन चार बिंबों को क्रमशः संघर्ष, संवेदना, अनुकूलन और प्रतिरोध से जोड़िए।

4(क). निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

प्राचीन भारत में चक्रवर्ती सम्राट कहलाने के लिए यहाँ के राजे अक्सर बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ा करते थे। मगर, इन लड़ाइयों के भीतर सिर्फ़ यही भाव नहीं था कि राजे अपना प्रभुत्व फैलाना चाहते थे। कुछ यह बात भी थी कि इस देश की भौगोलिक परिस्थिति ही सारे देश को एक देखना चाहती थी और भौगोलिक परिस्थिति की इस प्रेरणा से देश के सभी बड़े राजे इस बात के लिए उद्योग खड़ा कर देते थे कि सारा देश उनके अन्दर एक हो जाए । [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में पाठ का संदर्भ, कथन की परिस्थिति, केंद्रीय विचार और भाषा की विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- इस अंश का केंद्रीय विचार भारत की भौगोलिक एकता तथा उसे राजनीतिक एकता में व्यक्त करने की ऐतिहासिक प्रवृत्ति है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश 'यह देश एक है' निबंध से लिया गया है। इसमें लेखक भारत की एकता के ऐतिहासिक और भौगोलिक आधारों पर विचार करता है। प्राचीन राजाओं की चक्रवर्ती सम्राट बनने की आकांक्षा का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि उनके अभियानों को केवल व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा से समझना पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: गद्यांश की व्याख्या प्राचीन भारत के अनेक राजा व्यापक राज्य स्थापित कर चक्रवर्ती सम्राट कहलाना चाहते थे। इस उद्देश्य से वे बड़े युद्ध करते और दूसरे राज्यों को अपने शासन के अधीन लाने का प्रयास करते थे। सामान्यतः इन युद्धों में सत्ता, प्रतिष्ठा तथा राज्यविस्तार की इच्छा दिखाई देती है। लेखक इस कारण को नकारता नहीं, बल्कि उसके साथ एक अधिक व्यापक कारण जोड़ता है।

भारत की भौगोलिक स्थिति इस भूभाग को एक समग्र देश के रूप में देखने की प्रेरणा देती थी। इसी कारण शक्तिशाली राजाओं के प्रयत्नों में देश को एक राजनीतिक व्यवस्था के भीतर लाने की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है।

चरण 3: अभिप्राय और भाषा की विशेषताएँ यहाँ भौगोलिक एकता और राजनीतिक एकीकरण का संबंध स्पष्ट हुआ है। भौगोलिक परिस्थिति का देश को एक देखने की इच्छा रखना मानवीकरण है; इससे जटिल ऐतिहासिक विचार सहज बनता है। 'प्रभुत्व फैलाना' व्यक्तिगत सत्ता का भाव व्यक्त करता है, जबकि 'सारा देश ... एक हो जाए' व्यापक राष्ट्रीय एकता का संकेत देता है। भाषा सरल, तर्कप्रधान और व्याख्यात्मक है। लेखक का आशय प्रत्येक युद्ध को आदर्श सिद्ध करना नहीं, बल्कि इतिहास के पीछे काम करने वाली एकता की प्रेरणा को सामने लाना है।

चरण 4: निष्कर्ष गद्यांश का प्रतिपाद्य यह है कि प्राचीन भारत के राजनीतिक एकीकरण के प्रयासों में राजाओं की प्रभुत्व-लिप्सा के साथ देश की भौगोलिक एकता की प्रेरणा भी सक्रिय थी।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में 'सिर्फ़ यही भाव नहीं था' पर ध्यान दें; लेखक राज्यविस्तार के कारण को मिटाता नहीं, उसके साथ भौगोलिक एकता की प्रेरणा जोड़ता है।

4(ख). निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

जीवन के समान उसकी मृत्यु भी दैन्य से रहित थी। 'कुत्ते की मौत मरना' कहावत है, परन्तु यदि नीलू के समान शान्त, निर्लिप्त भाव से कोई मृत्यु का सामना कर सके, तो ऐसी मृत्यु मनुष्य को भी काम्य होगी। मेरे पास अनेक जीव-जन्तु हैं, परन्तु जिसके बुरा माने जाने की मुझे चिन्ता हो, ऐसा अब कोई नहीं है। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संस्मरणात्मक गद्य की व्याख्या में घटना के साथ लेखिका की अनुभूति तथा मनुष्य और प्राणी के आत्मीय संबंध को स्पष्ट करना चाहिए।
- इस अंश में नीलू की गरिमापूर्ण मृत्यु, उसके विशिष्ट व्यक्तित्व और उसके अभाव से उत्पन्न रिक्तता का चित्रण है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश महादेवी वर्मा के संस्मरण 'नीलू' से लिया गया है। नीलू की मृत्यु के प्रसंग में लेखिका उसके जीवन के स्वाभिमान और मृत्यु की शांति को याद करती हैं। उनके लिए नीलू केवल पालतू प्राणी नहीं, अपनी भावनाओं और आत्मसम्मान वाला आत्मीय साथी था।

चरण 2: शांत और गरिमापूर्ण मृत्यु की व्याख्या लेखिका कहती हैं कि नीलू ने जिस प्रकार अपना जीवन दीनता के बिना जिया, उसी प्रकार मृत्यु का सामना भी किया। 'दैन्य से रहित' का अर्थ है असहाय दीनता और गिड़गिड़ाहट से मुक्त। प्रचलित कहावत 'कुत्ते की मौत मरना' दुर्दशापूर्ण, अपमानजनक या उपेक्षित मृत्यु का भाव देती है। नीलू की मृत्यु इस नकारात्मक अर्थ के विपरीत थी। वह शांत और निर्लिप्त था; उसमें जीवन से चिपके रहने की व्याकुलता दिखाई नहीं देती। इसलिए लेखिका कहती हैं कि ऐसी गरिमापूर्ण मृत्यु तो मनुष्य के लिए भी वांछनीय हो सकती है। इस कथन में नीलू के प्रति गहरा सम्मान प्रकट होता है।

चरण 3: अंतिम वाक्य का भाव और अभिव्यक्ति-सौंदर्य लेखिका के पास दूसरे अनेक जीव-जंतु होने पर भी नीलू का अभाव पूरा नहीं होता। उसके बुरा मानने की चिंता बताती है कि वह उनके व्यवहार के प्रति संवेदनशील था और लेखिका उसकी भावनाओं का ध्यान रखती थीं। यह चिंता बोझ नहीं, आत्मीय संबंध की पहचान थी। अब ऐसा कोई नहीं होने का कथन उनके अकेलेपन तथा अपूरणीय क्षति को व्यक्त करता है। मुहावरे के प्रचलित अर्थ का उलटाव, सरल आत्मकथात्मक शैली और संयत करुणा अंश की प्रमुख विशेषताएँ हैं। लेखिका पशु-जीवन को तुच्छ समझने के स्थान पर उसकी संवेदनशीलता और गरिमा पहचानती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष नीलू की शांत मृत्यु उसकी जीवनगत गरिमा के अनुकूल थी। उसके निधन से लेखिका ने ऐसा आत्मीय साथी खो दिया जिसकी भावनाओं की वे विशेष चिंता करती थीं।

त्वरित सुझाव: 'कुत्ते की मौत' के सामान्य अर्थ और नीलू की वास्तविक मृत्यु का अंतर बताएँ, फिर अंतिम वाक्य से लेखिका के आत्मीय लगाव को स्पष्ट करें।

4(ग). निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

हे कलाकार, तुम तो जानते हो, राजनीति में केवल दो ही वर्ण होते हैं : एक सफ़ेद, एक काला। सफ़ेद अपने काले पर पोतने के लिए, काला औरों के सफ़ेद पर पोतने के लिए। कला-नीति में ऐसा नहीं होता। वहाँ तो वर्ण नहीं, रंग होते हैं; विविध रंग। कला-नीति में तो काला भी उतना ही सुन्दर है जितना कोई और रंग। काला राजनीति में कौआ है तो कला-नीति में कोकिल। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संवाद की व्याख्या में संबोधन, प्रतीकों और उनके माध्यम से व्यक्त केंद्रीय विचार को जोड़कर समझाया जाता है।
- सफेद और काला राजनीति में पक्षपातपूर्ण मूल्यांकन के प्रतीक हैं; कला में विविध रंग अपने सौंदर्य और अभिव्यक्ति के कारण महत्त्वपूर्ण हैं।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत संवादात्मक गद्यांश में कलाकार को संबोधित करके राजनीति और कला की दृष्टियों का अंतर स्पष्ट किया गया है। वक्ता रंगों के उदाहरण से बताता है कि राजनीति का स्वार्थपूर्ण मूल्यांकन और कलाकार की सौंदर्य-दृष्टि अलग-अलग आधारों पर काम करते हैं।

चरण 2: राजनीति में सफेद और काले का आशय यहाँ राजनीति में केवल दो वर्ण होने का कथन शाब्दिक रंग-विज्ञान का विवरण नहीं, व्यंग्य है। सफेद रंग अच्छाई, निष्कलंकता और उचित आचरण का प्रतीक है; काला दोष और बुराई का। स्वार्थपूर्ण राजनीति में व्यक्ति अपने दोषों पर सफेदी पोतकर स्वयं को निर्दोष दिखाता है। इसके विपरीत, दूसरों के अच्छे कार्यों पर कालिख लगाकर उन्हें दोषपूर्ण सिद्ध करना चाहता है। इस प्रकार अपने पक्ष का बचाव और विरोधी की निंदा वास्तविक गुण-दोष की निष्पक्ष पहचान को पीछे छोड़ देते हैं।

चरण 3: कला की विविधता और अंतिम तुलना कला में रंगों को पहले से अच्छे या बुरे खाँचों में नहीं बाँटा जाता। विविध रंग अभिव्यक्ति को समृद्ध बनाते हैं और काला भी दूसरे रंगों के समान सुंदर हो सकता है। उसका सौंदर्य कलात्मक प्रयोग तथा पूरी रचना के साथ उसके संबंध से उभरता है। कौआ और कोकिल की तुलना इसी दृष्टिभेद को प्रभावी बनाती है। राजनीति जिस काले को नकारात्मक बनाकर प्रस्तुत करती है, कला उसी में कोकिल की तरह माधुर्य और आकर्षण पहचान सकती है। यह तुलना रंग के आधार पर किसी जीव को अच्छा या बुरा ठहराने के लिए नहीं, सौंदर्य-दृष्टि का अंतर दिखाने के लिए की गई है।

चरण 4: शैलीगत विशेषताएँ कलाकार को सीधा संबोधन संवाद को जीवंत बनाता है। सफेद पोतने और काला पोतने के प्रयोग राजनीति की दोहरी नीति पर तीखा व्यंग्य करते हैं। विरोध, रंग-प्रतीक और कौआ-कोकिल की तुलना विचार को सरल और स्मरणीय बनाते हैं। कथन का आग्रह है कि कलात्मक मूल्यांकन को स्वार्थपूर्ण पक्षधरता से मुक्त रखकर विविधता का सम्मान किया जाए।

चरण 5: निष्कर्ष गद्यांश राजनीति की स्वार्थपूर्ण सफेदी और कालिख के विपरीत कला की उदार सौंदर्य-दृष्टि को प्रतिष्ठित करता है, जिसमें विविध रंगों के साथ काले रंग का भी अपना सौंदर्य है।

त्वरित सुझाव: दोनों रंगों का केवल अर्थ न लिखें; पहले राजनीति में उनके स्वार्थपूर्ण प्रयोग और फिर कला में काले रंग की सौंदर्यगत स्वीकृति का अंतर बताएँ।

5(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए।

'एक था पेड़ और एक था ठूँठ' पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक ने दृढ़ और अड़ियल में क्या अंतर किया है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृढ़ता विवेक और उचित आदर्शों पर टिके रहने का गुण है; अड़ियलपन विवेकहीन हठ है।
- जीवित पेड़ का लचीलापन और ठूँठ की जड़ता इन दोनों प्रवृत्तियों का अंतर स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: पेड़ और ठूँठ के व्यवहार को समझिए लेखक पेड़ और ठूँठ के माध्यम से जीवन की दो भिन्न प्रवृत्तियाँ सामने रखते हैं। पेड़ जड़ों से भूमि में दृढ़ता से जुड़ा रहता है, किंतु उसकी डालियाँ हवा के साथ हिलती और झुकती हैं। इस प्रकार आधार की मजबूती के साथ व्यवहार में लचीलापन रह सकता है। परिस्थितियों के अनुकूल झुकना अपने मूल आधार को त्यागना नहीं होता। इसके विपरीत ठूँठ का न

हिलना जीवन की शक्ति का प्रमाण नहीं, उसकी निर्जीव जड़ता का संकेत है।

चरण 2: दृढ़ता को विवेक से जोड़िए दृढ़ व्यक्ति सत्य और औचित्य की रक्षा करता है, पर अच्छी बात स्वीकारने या अपनी भूल सुधारने से नहीं हिचकता। अड़ियल व्यक्ति केवल अपनी बात मनवाने के लिए अड़ा रहता है; वह सही और गलत में भेद करने के बजाय हठ को महत्त्व देता है। इसलिए दोनों का बाहरी रूप कभी समान लगने पर भी उनका आधार अलग है। एक जीवन को आगे बढ़ाता है, दूसरा उसके विकास को रोकता है। दृढ़ता की पहचान केवल न झुकने से नहीं होती। यह भी देखना होता है कि व्यक्ति किस बात पर और किस उद्देश्य से टिका हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक के अनुसार दृढ़ व्यक्ति अपने उचित सिद्धांतों पर अटल रहता है, लेकिन परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार में लचीलापन अपनाता है। जीवित पेड़ जड़ों से दृढ़ होकर भी हवा में झुकता है। अड़ियल व्यक्ति विवेक छोड़कर हठ करता है; वह ठूँठ की तरह न झुकता है, न बदलता है। इस प्रकार दृढ़ता जीवंत शक्ति है और अड़ियलपन निष्प्राण जड़ता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पेड़ की मजबूत जड़ों तथा लचीली डालियों की तुलना ठूँठ की जड़ता से अवश्य कीजिए।

5(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए।

'तत्सत्' शब्द का आशय स्पष्ट करते हुए कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक की सार्थकता बताते समय उसका अर्थ, कथा की केंद्रीय समस्या और अंतिम अनुभूति जोड़नी चाहिए।
- कहानी में अलग-अलग प्राणियों की खंडित दृष्टि के सामने वन की समग्र सत्ता का बोध रखा गया है।

चरण 1: शीर्षक का अर्थ स्पष्ट कीजिए 'तत्सत्' का आशय है—वह सत्य है। कहानी में वन के प्राणी स्वयं को अलग-अलग पहचानते हैं, इसलिए उन सबमें व्याप्त वन का अस्तित्व समझ नहीं पाते। उनकी जिज्ञासा किसी नए जंतु की खोज जैसी बन जाती है, जबकि प्रश्न अपनी सीमित पहचान से आगे देखने का है। शीर्षक उसी व्यापक सत्य की ओर संकेत करता है जिसे केवल व्यक्तिगत अस्तित्व पर आग्रह रखने से नहीं पहचाना जा सकता।

चरण 2: कथा के अंत से संबंध स्थापित कीजिए बड़ दादा को अंत में समग्र सत्ता का अनुभव होता है। तब अलग-अलग अस्तित्वों का आग्रह पीछे छूट जाता है और सबको धारण करने वाली एकता प्रमुख होती है। वन उसके घटकों से बाहर खड़ी कोई अलग वस्तु नहीं है। इस अनुभूति के कारण कहानी का शीर्षक केवल कथास्थल का नाम नहीं रहता, बल्कि उसके दार्शनिक आशय को व्यक्त करता है। उत्तर में शब्दार्थ के साथ यही संबंध दिखाना आवश्यक है। इस प्रकार कथा आरंभ में उठे प्रश्न का उत्तर अंत की अनुभूति से देती है। शीर्षक उस अनुभव को संक्षेप में व्यक्त करके कथा के आरंभ और अंत को जोड़ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'तत्सत्' का अर्थ है—वह सत्य है। कहानी के पेड़-पौधे और पशु अपनी अलग पहचान जानते हैं, पर समग्र वन को नहीं पहचानते। अंत में बड़ दादा को बोध होता है कि व्यापक सत्ता सबमें व्याप्त है। खंडों के अहं से ऊपर उठकर समग्रता का यह अनुभव ही कहानी का केंद्रीय सत्य है। इसी को प्रकट करने के कारण शीर्षक सार्थक है।

त्वरित सुझाव: पहले 'तत्सत्' का अर्थ लिखिए, फिर वन की समग्रता और बड़ दादा के अंतिम बोध से उसकी सार्थकता जोड़िए।

5(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए।

शताब्दियों से भारतीय संस्कृति की प्रवहमान धारा की क्या विशेषताएँ थीं जिन्हे हमने धीरे-धीरे सूख जाने दिया है ? 'मेरे लिए भारतीय होने का अर्थ' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निर्मल वर्मा भारतीयता को साझा स्मृतियों, प्रकृति और सांस्कृतिक संबंधों से जुड़ा अनुभव मानते हैं।
- संस्कृति की प्रवहमानता का आशय विभिन्न समुदायों को स्थान देते हुए अपनी परंपरा को जीवित रखना है।

चरण 1: सांस्कृतिक धारा की विशेषताएँ पहचानिए लेखक की दृष्टि में भारतीय संस्कृति अपने भीतर विविध विश्वासों और जीवन-पद्धतियों को स्थान देती रही है। दूसरे समुदाय को केवल सहन करना ही पर्याप्त नहीं; उसके स्वतंत्र जीवन के लिए आत्मीय स्थान देना भी आवश्यक है। इस संस्कृति में मनुष्य का प्रकृति तथा पूर्वजों की स्मृति से संबंध बना रहता है। इसी कारण देश के प्रति लगाव भूमि के स्वामित्व से आगे बढ़कर सांस्कृतिक आत्मीयता बन जाता है।

चरण 2: धारा के सूखने का आशय समझिए अपनी सांस्कृतिक स्मृति से कटना और दूसरों से आत्मीय संबंध खोना उस धारा का सूखना है। यह केवल पुरानी रीति भूलने का प्रश्न नहीं, एक-दूसरे के साथ जीने की संवेदना कमजोर पड़ने का प्रश्न है। इसलिए उत्तर में विशेषताओं की सूची के साथ उनके क्षय का अर्थ भी बताना चाहिए। लेखक का संकेत अपनी जीवित परंपरा को समझने और उसके उदार भाव को वर्तमान जीवन में बचाए रखने की ओर है। इस आत्मीयता का विस्तार ही संस्कृति की उदार शक्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय संस्कृति की धारा उदार, समावेशी और आत्मीय थी। उसमें विभिन्न जातियों तथा धर्मों को स्वतंत्र जीवन का स्थान मिला; पराए को भी अपना माना गया। प्रकृति, पूर्वजों और सांस्कृतिक स्मृतियों से गहरा संबंध इस धारा को जीवित रखता था। हमने संकीर्णता, परस्पर अविश्वास और स्मृतिहीनता बढ़ाकर उसकी ग्रहणशीलता, सहअस्तित्व तथा आत्मीय एकता को धीरे-धीरे क्षीण होने दिया है।

त्वरित सुझाव: उदारता, समावेश और सांस्कृतिक स्मृति को प्रमुख बिंदु बनाइए; अंत में बताइए कि उनके क्षय से धारा कैसे सूखती है।

---

6. भगवतीशरण सिंह के जीवन, रचनाओं और भाषा-शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक-परिचय में जीवन, प्रमुख कृतियों और भाषा-शैली का संतुलित विवेचन आवश्यक है।
- भगवतीशरण सिंह के लेखन में संस्कृति, प्रकृति और मानवीय अनुभवों के प्रति आत्मीयता दिखाई देती है।

चरण 1: जीवन-परिचय भगवतीशरण सिंह का जन्म 10 नवम्बर, 1919 को हुआ। उन्होंने वाराणसी और प्रयाग में शिक्षा प्राप्त की। भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण उनकी अंग्रेज़ी साहित्य की उच्च शिक्षा बीच में रुक गई। बाद में उन्होंने काशी विश्वविद्यालय से विधि की पढ़ाई की और कुछ समय वकालत की। आगे चलकर वे प्रशासनिक सेवा में आए तथा उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। साहित्य और संस्कृति से उनका संपर्क विद्यार्थी जीवन से ही रहा।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ भगवतीशरण सिंह ने निबंध, कहानी और यात्रा-वृत्तांत आदि विधाओं में लेखन किया। उनके ललित निबंधों में 'मानव के मूल में' और 'एक और फेरा है जी का' उल्लेखनीय हैं। 'अपराजिता' उनका कहानी-संग्रह तथा 'भाषा की शिक्षा' निबंध-संग्रह है। 'जंगल और जानवर' तथा 'वन पाहुन' में वन और वन्य जीवों का संसार सामने आता है। 'साहित्य : पहचान और पहुँच' तथा 'रस गगन गुफा में' भी उनकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

चरण 3: भाषा-शैली उनकी भाषा परिमार्जित, प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है। विषय के अनुसार उसमें साहित्यिक शब्दावली और सहज अभिव्यक्ति का मेल मिलता है। वर्णनात्मक शैली में वे स्थानों, प्राकृतिक दृश्यों और प्राणियों का सजीव चित्र उपस्थित करते हैं। विचारात्मक अंशों में भाषा संयत और विवेचनात्मक हो जाती है। आत्मीयता, सूक्ष्म निरीक्षण तथा संवेदनशील दृष्टि उनके गद्य को प्रभावशाली बनाती है। उनके यात्रा-लेखन में दृश्य-वर्णन के साथ सांस्कृतिक अनुभव भी जुड़ता है।

चरण 4: निष्कर्ष भगवतीशरण सिंह बहुमुखी गद्यकार हैं। प्रकृति और संस्कृति के प्रति अनुराग, अनुभव की प्रामाणिकता और आत्मीय वर्णन उनकी साहित्यिक पहचान बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: लेखक का नाम भगवतीशरण सिंह ही रखें; परिचय में जीवन, रचनाएँ और शैली तीनों को अलग अनुच्छेदों में लिखें।

अथवा

6. जैनेन्द्र कुमार के जीवन, रचनाओं और भाषा-शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जैनेन्द्र कुमार हिंदी के प्रमुख मनोवैज्ञानिक कथाकार, उपन्यासकार और निबंधकार हैं।
- उनके साहित्य में बाहरी घटनाओं के साथ व्यक्ति के अंतर्द्वंद्व और नैतिक प्रश्नों की पड़ताल महत्त्वपूर्ण है।

चरण 1: जीवन-परिचय जैनेन्द्र कुमार का जन्म 2 जनवरी, 1905 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के कौड़ियागंज में हुआ। उनके बचपन का नाम आनंदीलाल था। उन्होंने जैन गुरुकुल में शिक्षा पाई तथा राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया। गांधीवादी विचारों, अहिंसा और मानवीय संबंधों के प्रश्नों का उनके चिंतन पर गहरा प्रभाव पड़ा। हिंदी कथा-साहित्य में उन्होंने व्यक्ति के मन और उसकी समस्याओं को केंद्रीय स्थान दिया। उनका निधन 24 दिसम्बर, 1988 को हुआ।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ उनके प्रमुख उपन्यास 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', 'सुखदा', 'विवर्त', 'व्यतीत' और 'जयवर्धन' हैं। कहानी-संग्रहों में 'फाँसी', 'वातायन', 'एक रात', 'नीलम देश की राजकन्या' तथा 'पाजेब' उल्लेखनीय हैं। उनके निबंध-संग्रहों में 'प्रस्तुत प्रश्न', 'जड़ की बात', 'साहित्य का श्रेय और प्रेय', 'मंथन' और 'सोच-विचार' महत्त्वपूर्ण हैं। इन विविध रचनाओं में मानवीय स्वतंत्रता, प्रेम, संबंध और नैतिकता के प्रश्न बार-बार उभरते हैं।

चरण 3: भाषा और शैली जैनेन्द्र की भाषा सहज, सजीव और अर्थगर्भित खड़ी बोली है। वे छोटे, सधे हुए वाक्यों और बोलचाल की आत्मीयता से गहरी बात कह देते हैं। आवश्यकतानुसार तत्सम तथा प्रचलित अन्य शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग मिलता है। उनकी शैली मनोविश्लेषणात्मक, विचारात्मक और संवादात्मक है। प्रश्नोत्तर, आत्मसंवाद और सूक्ष्म संकेतों से वे पात्रों की मनःस्थितियाँ खोलते हैं। 'त्यागपत्र' में मृणाल जैसे पात्र के माध्यम से व्यक्ति और सामाजिक मर्यादाओं के संघर्ष की पड़ताल उनके विशिष्ट कथा-स्वर को स्पष्ट करती है।

चरण 4: निष्कर्ष जैनेन्द्र ने हिंदी कथा-साहित्य को मनुष्य के भीतरी संसार की सूक्ष्म पहचान दी। मनोवैज्ञानिक दृष्टि, चिंतनशीलता और संक्षिप्त किंतु गहन भाषा उनके लेखन की मुख्य विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: रचनाओं को उपन्यास, कहानी और निबंध की श्रेणियों में लिखें तथा शैली में मनोवैज्ञानिकता का उल्लेख अवश्य करें।

7(क). 'विविधा भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :

'माँ जानती है' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि 'अरुमुगम' की मृत्यु पर उसकी माँ को यह क्यों नहीं समझ आ पा रहा था कि वह रोए या प्रसन्न हो। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'माँ जानती है' में पुत्र के प्रति माँ की ममता और देश के लिए उसके बलिदान का गौरव एक साथ व्यक्त होते हैं।
- पात्र की मनःस्थिति स्पष्ट करते समय शोक और प्रसन्नता के अलग-अलग कारण बताना आवश्यक है। यहाँ प्रसन्नता का अर्थ पुत्र की मृत्यु की खुशी नहीं, उसकी वीरता पर गर्व है।

चरण 1: पुत्र-वियोग का दुःख समझिए अरुमुगम की मृत्यु से माँ ने अपना प्रिय पुत्र खो दिया था। उसका वात्सल्य इस वियोग को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर सकता था। जिसे उसने स्नेह से पाला था, उसका सदा के लिए बिछुड़ जाना उसके लिए गहरे शोक का कारण था। इसलिए माँ का मन रोने को होता था।

चरण 2: बलिदान पर गर्व का कारण पहचानिए अरुमुगम देश की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ था। श्रीनगर में शत्रु से संघर्ष करते समय उसने अदम्य साहस दिखाया और उसके शौर्य को वीर-चक्र से सम्मानित किया गया। उसका बलिदान माँ के लिए गौरव का विषय भी था। पुत्र को खोने की पीड़ा और उसकी वीरता पर गर्व एक साथ उमड़ने से माँ असमंजस में थी।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लिखिए अरुमुगम की मृत्यु से माँ को पुत्र-वियोग का असहनीय दुःख था। किंतु उसने देश की रक्षा में प्राण देकर माँ का गौरव बढ़ाया था। ममता उसे रुला रही थी और पुत्र की वीरता पर गर्व प्रसन्न कर रहा था। इसलिए वह दुविधा में थी।

चरण 4: निष्कर्ष माँ की दुविधा पुत्र-वियोग के शोक और उसके देशहित में किए गए बलिदान पर गर्व के एक साथ उपस्थित होने से उत्पन्न हुई थी।

त्वरित सुझाव: 'रोए या प्रसन्न हो' का उत्तर देते समय दोनों भावों के कारण लिखिए: पुत्र का बिछोह और उसके वीरतापूर्ण बलिदान का गौरव।

7(ख). 'विविधा भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :
पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के व्यक्तित्व की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तित्व की विशेषताओं का उत्तर देते समय केवल प्रशंसा न करें; प्रत्येक गुण को व्यक्ति के जीवनकार्य से जोड़ें। यहाँ संगीत-साधना, आत्मसम्मान और संगीत के प्रसार के प्रति समर्पण प्रमुख हैं।
- तीन विशेषताएँ अलग-अलग बतानी हैं। एक ही गुण को लगन, मेहनत और परिश्रम जैसे पर्यायों में दोहराने से व्यक्तित्व के तीन स्वतंत्र पक्ष स्पष्ट नहीं होंगे।

चरण 1: साधना और आत्मसम्मान समझें पलुस्कर संगीत को गंभीर साधना मानते थे। उनकी लगन और कठोर अभ्यास ने उन्हें विशिष्ट संगीतज्ञ बनाया। कला के प्रति उनकी निष्ठा के साथ स्वाभिमान भी जुड़ा था; वे संगीत और संगीतज्ञ की प्रतिष्ठा को महत्त्व देते थे। इसलिए उत्तर में साधना और आत्मसम्मान को दो अलग विशेषताओं के रूप में रखना उचित है।

चरण 2: लोकहितकारी दृष्टि जोड़ें वे संगीत को केवल निजी यश या दरबारी मनोरंजन तक सीमित नहीं रखना चाहते थे। संगीत-शिक्षा के प्रसार के लिए उनका प्रयत्न कला के प्रति व्यापक दृष्टि का परिचायक है। इससे उनके व्यक्तित्व का समाजोपयोगी पक्ष सामने आता है। उत्तर को लगभग 40 शब्दों में रखने के लिए प्रत्येक गुण के साथ एक छोटा स्पष्टीकरण पर्याप्त है।

चरण 3: निष्कर्ष पलुस्कर दृढ़ संकल्प वाले संगीत-साधक थे; कठिनाइयों में भी अभ्यास नहीं छोड़ते थे। वे स्वाभिमानी थे और कला की गरिमा बनाए रखते थे। वे लोकहितैषी भी थे; संगीत-शिक्षा के प्रसार और संगीतज्ञों की प्रतिष्ठा के लिए समर्पित रहे।

त्वरित सुझाव: तीन स्वतंत्र बिंदु रखें: साधना, स्वाभिमान और संगीत-प्रसार; हर बिंदु का छोटा आधार भी बताएँ।

7(ग). 'विविधा भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :

'प्रेरक प्रसंग' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि फ़ौजी के प्रति टण्डन जी का व्यवहार पाठकों को क्या प्रेरणा देता है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रेरणा संबंधी प्रश्न में घटना से मिलने वाला जीवन-मूल्य स्पष्ट करना आवश्यक है। यहाँ अंग्रेज़ फ़ौजी अधिकारी का दबाव और उसके सामने टण्डन जी का नियमपालन महत्त्वपूर्ण है।
- न्याय का अर्थ सभी पर समान नियम लागू करना है। साहस का अर्थ केवल कठोर भाषा बोलना नहीं, बल्कि दबाव के बावजूद उचित निर्णय पर दृढ़ रहना है।

चरण 1: प्रसंग का आधार पहचानें फ़ौजी अधिकारी स्वयं को प्रभावशाली मानकर नगरपालिका के जल-कर संबंधी नियमों की उपेक्षा करना चाहते थे। टण्डन जी ने उनके प्रभाव के कारण नियमों में छूट नहीं दी। उन्होंने कर जमा करने के लिए कहा और भुगतान न होने पर पानी बंद करने की कार्रवाई से भी पीछे नहीं हटे। यह प्रसंग उनके निष्पक्ष प्रशासन का उदाहरण है।

चरण 2: व्यवहार से प्रेरणा निकालें टण्डन जी का आचरण बताता है कि पद का उपयोग अनुचित दबाव के सामने झुकने के लिए नहीं, कर्तव्य निभाने के लिए करना चाहिए। नियमों का पालन करवाते समय व्यक्ति को निर्भीक, न्यायप्रिय और संयमी रहना चाहिए। उत्तर का केंद्र किसी अधिकारी से व्यक्तिगत शत्रुता नहीं, बल्कि कानून की समानता और उत्तरदायित्व होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ौजी अधिकारी के दबाव में न आकर टण्डन जी ने जल-कर वसूलने के नियम का पालन कराया। उनका व्यवहार निर्भीकता, निष्पक्षता और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा देता है। हमें प्रभावशाली व्यक्ति के सामने भी न्याय और नियमों पर दृढ़ रहना चाहिए।

त्वरित सुझाव: जल-कर का प्रसंग बताकर उससे निर्भीकता और समान नियमपालन की प्रेरणा निकालें।

7(घ). 'विविधा भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :

'सत्यकिरण' एकांकी के खगेश की दृष्टि में प्रसिद्ध साहित्यकार बनने के लिए क्या गुण आवश्यक हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खगेश के कथन साहित्यिक जगत के पाखंड पर व्यंग्य हैं। यहाँ गुण शब्द से उसके द्वारा अपनाई गई स्वार्थपूर्ण चालाकियाँ समझनी चाहिए।
- उत्तर में खगेश की दृष्टि और सच्ची साहित्य-साधना का अंतर स्पष्ट रहना चाहिए। उसकी प्रसिद्धि मौलिक प्रतिभा की विश्वसनीय कसौटी नहीं है।

चरण 1: रचनाएँ तैयार करने की चाल समझना खगेश स्वीकार करता है कि वह दूसरे से लिखवाकर अपने नाम से कविता छपवाता है। पुरानी पांडुलिपियों और पत्र-पत्रिकाओं की अलग-अलग पंक्तियाँ जोड़कर भी नई रचना बना लेता है। वह इसी जोड़-तोड़ को अपनी मौलिकता बताता है। इससे उसकी साहित्यिक चोरी और अवसरवादी बुद्धि प्रकट होती है।

चरण 2: संपर्क और प्रचार की भूमिका पहचानना वह चतुराई और चाटुकारिता से संपादकों से संबंध बनाता है। उनसे अपनी प्रशंसा में लेख लिखवाकर प्रसिद्धि अर्जित करता है। प्रभावशाली प्रकाशक से संबंध भी उसके काम आता है। अतः उसकी दृष्टि में स्वार्थ साधने की क्षमता, दूसरों की रचनाओं का उपयोग और प्रशंसा का प्रचार ही ख्याति प्राप्त करने के साधन हैं। इस दृष्टिकोण का वर्णन करते हुए उसकी नैतिक स्वीकृति नहीं देनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष खगेश की दृष्टि में चतुराई, चाटुकारिता और स्वार्थबुद्धि आवश्यक हैं। दूसरे की रचनाएँ अपने नाम से छपवाना, पुरानी पंक्तियाँ जोड़ना, संपादकों-प्रकाशकों से संबंध बनाना तथा अपनी प्रशंसा करवाना प्रसिद्धि के उपाय हैं। उसके कथन साहित्यिक पाखंड पर व्यंग्य करते हैं।

त्वरित सुझाव: खगेश के गुण व्यंग्यात्मक हैं: रचनाओं की चोरी, संपादकों की चापलूसी और अपना प्रचार मुख्य रखें।

8(क). प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-30 शब्दों में दीजिए :

"मेरी दासी कोई भी नहीं होगी। मेरी सखी सहेली होकर रहेगी।" उपर्युक्त कथन किसका है ? इससे उसके चरित्र की किस विशेषता पर प्रकाश पड़ता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथन-आधारित चरित्र-प्रश्न के दो भाग हैं: वक्ता की पहचान और उसके शब्दों से प्रकट गुण। दोनों का उत्तर देना आवश्यक है।
- दासी के स्थान पर सखी-सहेली का संबंध स्वीकारना ऊँच-नीच से ऊपर उठकर दूसरे व्यक्ति की गरिमा और आत्मसम्मान को स्वीकारना है।

चरण 1: वक्ता की पहचान करें यह कथन रानी लक्ष्मीबाई का है। उनके शब्दों में अपनी सेवा में आई स्त्रियों के प्रति अपनापन है। वे उन्हें केवल आज्ञा मानने वाली दासियाँ बनाकर नहीं रखना चाहतीं, बल्कि अपने साथ सखी-सहेली के रूप में रहने का स्थान देती हैं।

चरण 2: कथन से गुण स्पष्ट करें दासी और सखी के संबंध में मूल अंतर अधिकार की ऊँचाई और आत्मीय समानता का है। रानी का कथन उनकी उदारता, समानताप्रियता और मानवीय संवेदना प्रकट करता है। संक्षिप्त उत्तर में वक्ता के नाम के बाद यही गुण कथन से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष यह कथन रानी लक्ष्मीबाई का है। इससे उनकी समानताप्रियता, उदारता और आत्मीयता प्रकट होती है। वे सेविकाओं को दासी न मानकर सखियों जैसा सम्मान और अपनापन देना चाहती थीं।

त्वरित सुझाव: पहले वक्ता का नाम लिखें, फिर दासी से सखी बनने के भाव को समानता और सम्मान से जोड़ें।

8(ख). प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-30 शब्दों में दीजिए :

रानी का अंतिम संस्कार किसने कैसे किया ? उसके चितास्थल पर रातों-रात चबूतरा क्यों बना दिया गया ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग-आधारित उत्तर में अंतिम संस्कार करने वाले व्यक्ति, संस्कार की रीति और चबूतरा बनाने का उद्देश्य अलग-अलग पहचानना चाहिए।
- रानी की देह को अंग्रेज़ों से बचाना और चितास्थल को छिपाना एक ही सुरक्षा-भावना से जुड़े हैं; उत्तर में इस संबंध को स्पष्ट करें।

चरण 1: अंतिम संस्कार का प्रसंग समझें युद्ध में गंभीर रूप से घायल रानी को उनके विश्वस्त साथी बाबा गंगादास की कुटिया तक ले आए। उनकी मृत्यु के बाद रामचन्द्र देशमुख ने साथियों और बाबा के सहयोग से चिता तैयार करके अग्नि-संस्कार किया। बाबा की कुटिया की लकड़ियाँ चिता बनाने के काम आईं।

चरण 2: चबूतरे का उद्देश्य बताएँ रानी की इच्छा थी कि अंग्रेज़ उनके शरीर को स्पर्श न कर सकें। दाह-संस्कार के बाद चितास्थल पर रातों-रात चबूतरा बना देने का उद्देश्य उस स्थान की पहचान छिपाना था। इस प्रकार अंग्रेज़ रानी के अवशेषों का पता लगाकर उनका अपमान नहीं कर सकते थे।

चरण 3: निष्कर्ष रामचन्द्र देशमुख ने बाबा गंगादास की कुटिया की लकड़ियों से चिता बनाकर रानी का अग्नि-संस्कार किया। अंग्रेज़ अवशेष पहचानकर अपमान न कर सकें, इसलिए चितास्थल पर रातों-रात चबूतरा बना दिया गया।

त्वरित सुझाव: किसने, कैसे और क्यों: देशमुख, कुटिया की लकड़ियों की चिता, तथा अंग्रेज़ों से अवशेषों की रक्षा।

9. तात्या टोपे की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में पात्र के गुणों को उसके आचरण और कथानक से जोड़कर स्पष्ट किया जाता है।
- तात्या टोपे के व्यक्तित्व का केंद्र देशभक्ति, सैनिक नेतृत्व और स्वराज्य के प्रति निष्ठा है।

चरण 1: देशभक्ति और स्वराज्यनिष्ठा तात्या टोपे अंग्रेजी पराधीनता के विरोधी और स्वराज्य के समर्थक हैं। वे अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति को देश के लिए घातक मानते हैं। नाना साहब की पेंशन छीने जाने के प्रसंग में उनका क्षोभ केवल निजी शिकायत तक सीमित नहीं रहता; वे देश में फैलते अंग्रेजी अन्याय को पहचानते हैं। रानी लक्ष्मीबाई के साथ उनका विचार-विमर्श इसी राष्ट्रीय चिंता को सामने लाता है।

चरण 2: संगठन और सैनिक नेतृत्व वे साहसी, कर्मठ और युद्धकुशल सेनानायक हैं। संघर्ष की तैयारी, सहयोगियों से संपर्क और सैनिक शक्ति जुटाने में उनकी सक्रियता दिखाई देती है। नाना साहब और रानी के बीच संपर्क स्थापित करके वे स्वाधीनता के प्रयत्नों को एक दिशा देने का काम करते हैं। कठिन परिस्थिति उन्हें निष्क्रिय नहीं बनाती; वे उपलब्ध शक्ति को संगठित करने में लगे रहते हैं।

चरण 3: रानी के प्रति सम्मान और मानवीयता तात्या रानी के विवेक, साहस और नेतृत्व का आदर करते हैं। वे उनके परामर्श को महत्त्व देते हैं और देश की मुक्ति के प्रयत्न में सहयोगी बनते हैं। उनके व्यक्तित्व में केवल सैनिक कठोरता नहीं है; जूही के प्रति स्नेह उनकी भावुकता और कोमल हृदय का परिचय देता है। किंतु व्यक्तिगत आकर्षण देश के प्रति उनके दायित्व का स्थान नहीं लेता।

चरण 4: उत्साह के साथ अधीरता उनमें तत्काल कार्य करने का उत्साह है, जो कभी अधीरता भी बन जाता है। जनता की स्थिति पर रानी से उनकी बातचीत में यह प्रवृत्ति दिखाई देती है; रानी उन्हें धैर्य और उचित समय का महत्त्व समझाती हैं। यह सीमा उन्हें मानवीय बनाती है और उनके चरित्र को एकांगी प्रशंसा से बचाती है।

चरण 5: निष्कर्ष तात्या टोपे देशभक्त, साहसी, संगठनकुशल और संवेदनशील सेनानायक हैं; उत्साह और कभी-कभी अधीरता उनके व्यक्तित्व के मानवीय पक्ष हैं।

त्वरित सुझाव: गुण गिनाने के साथ रानी से विचार-विमर्श और स्वराज्य-संगठन जैसे प्रसंग अवश्य जोड़ें।

अथवा

9. जूही की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जूही के चरित्र में कला, प्रेम और देशभक्ति का समन्वय दिखाई देता है।
- पात्र की विशेषताएँ बताते समय उसके व्यवहार और कार्यों को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: कुशल कलाकार और जीवंत स्वभाव जूही प्रतिभाशाली नर्तकी और अभिनेत्री है। रत्नावली के अभिनय में सागरिका की भूमिका निभाने तथा नृत्य के प्रसंग से उसकी कलात्मक दक्षता स्पष्ट होती है। उसके व्यक्तित्व में सौंदर्य के साथ स्फूर्ति, प्रसन्नता और सहज आकर्षण है। रानी के विवाह के उल्लास में उसका नृत्य करने का आग्रह उसके उत्साही स्वभाव को प्रकट करता है।

चरण 2: निर्भीकता और स्वतंत्र व्यक्तित्व वह अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से व्यक्त करती है और आवश्यक अवसर पर संकोच में दबकर नहीं रहती। मोतीबाई के साथ बातचीत में उसकी स्पष्टवादिता और चंचलता सामने आती है। किंतु उसे केवल चंचल कलाकार मानना अधूरा होगा; आगे चलकर उसी ऊर्जा का संबंध देश और रानी के कार्य से जुड़ता है। उसमें जोखिम उठाने का साहस है।

चरण 3: देशभक्ति और कर्तव्यनिष्ठा जूही रानी की विश्वस्त सहयोगिनी है। वह स्वतंत्रता के प्रयत्न में सहयोग करती है और अपने जीवन को केवल रंगशाला के मनोरंजन तक सीमित नहीं रखती। समाचार पहुँचाने और संपर्क के कार्यों में उसके साहस तथा बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है। संकट में भी कर्तव्य निभाने की तत्परता उसे सम्माननीय बनाती है।

चरण 4: निष्ठावान प्रेम और त्याग तात्या टोपे के प्रति उसका प्रेम हृदय की सच्चाई और संवेदनशीलता का परिचायक है। यह प्रेम स्वार्थ अथवा व्यक्तिगत सुख की माँग तक सीमित नहीं है। वह देश की मुक्ति के उद्देश्य को भी महत्त्व देती है और कठिन कार्य में प्राणों का संकट स्वीकार करने को तैयार रहती है। इस प्रकार उसके कोमल भावों के साथ आत्मत्याग और दृढ़ता भी जुड़ी है।

चरण 5: निष्कर्ष जूही कला में निपुण, स्पष्टवादी, साहसी, प्रेमनिष्ठ और देशभक्त स्त्री है। उसकी विशेषता व्यक्तिगत प्रेम और राष्ट्रीय कर्तव्य का सुंदर समन्वय है।

त्वरित सुझाव: जूही को केवल नर्तकी न लिखें; कला, निर्भीकता, देशसेवा और निष्ठावान प्रेम के पक्ष अलग स्पष्ट करें।

10(क). किन्हीं दो में सन्धि-विच्छेद कीजिए : निरोग, स्वल्प, देवेश । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संधि-विच्छेद में मिले हुए वर्णों के स्थान पर मूल पद और उनकी ध्वनियाँ पहचानी जाती हैं।
- विच्छेद की जाँच के लिए मूल पदों की संधि दोबारा करें; उससे वही वर्तनी बननी चाहिए।

चरण 1: स्वल्प और देवेश का विच्छेद स्वल्प = सु + अल्प। उ के बाद भिन्न स्वर अ आने पर उ का व् हो जाता है; यह यण संधि है। देवेश = देव + ईश। देव के अंतिम अ और ईश के आरंभिक ई से ए बनता है; यह गुण संधि है। परीक्षा में किन्हीं दो के निर्देश के अनुसार ये दोनों विच्छेद लिखे जा सकते हैं।

चरण 2: निरोग की वर्तनी का भेद समझें निरोग का अर्थ रोगरहित है, पर इसे निः + रोग का नियमित विसर्ग-संधि रूप कहना सही नहीं है। निः + रोग की नियमित संधि नीरोग होती है: र के पहले विसर्ग से प्राप्त र् का लोप और उससे पहले के इ का दीर्घ ई होता है। इसलिए प्रश्न में दिए ह्रस्व इ वाले निरोग और नियमित संधि से बने नीरोग की वर्तनी का भेद बनाए रखें।

चरण 3: निष्कर्ष अपेक्षित दो विच्छेद हैं: स्वल्प = सु + अल्प; देवेश = देव + ईश। तीसरे शब्द निरोग के संबंध में ध्यान रखें कि निः + रोग की नियमित संधि नीरोग है।

त्वरित सुझाव: स्वल्प में व् से मूल उ और देवेश में ए से अ + ई पहचानें; निरोग और नीरोग में इ की मात्रा जाँचें।

10(ख). किन्हीं दो में सन्धि कीजिए : महा + उदधि, सत् + गति, अवनि + ईश । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संधि में पास-पास आने वाली ध्वनियों में नियमानुसार परिवर्तन होता है।
- शब्द जोड़ते समय मिलने वाली अंतिम और आरंभिक ध्वनि पहले पहचाननी चाहिए।

चरण 1: स्वर-संधि वाले पद महा + उदधि = महोदधि। आ और उ के मेल से ओ बनता है; यह गुण संधि है।
अवनि + ईश = अवनीश। इ और ई के मेल से दीर्घ ई बनता है; यह दीर्घ स्वर-संधि है।

चरण 2: व्यंजन-संधि वाला पद सत् + गति = सद्गति। अगले घोष व्यंजन ग के प्रभाव से त् के स्थान पर द् हो जाता है। यह व्यंजन-संधि है। निर्देश में किन्हीं दो के उत्तर अपेक्षित हैं; यहाँ सभी पदों के रूप स्पष्ट कर दिए गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष महा + उदधि = महोदधि; सत् + गति = सद्गति; अवनि + ईश = अवनीश।

त्वरित सुझाव: महोदधि में ओ और अवनीश में दीर्घ ई का ध्यान रखें; सद्गति में द् लिखना न भूलें।

10(ग). किन्हीं दो पदों का समास-विग्रह कर समास का नाम भी बताइए : रसोईघर, प्रधानाचार्य, यथाशक्ति । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समास-विग्रह में समस्त पद के भीतर छिपे संबंध को स्पष्ट किया जाता है।
- समास का नाम पहचानने के लिए प्रधान पद, लुप्त विभक्ति तथा अर्थ-संबंध देखें।

चरण 1: रसोईघर का विग्रह रसोईघर = रसोई के लिए घर। यह चतुर्थी तत्पुरुष समास है। घर वह स्थान है जो भोजन पकाने अर्थात् रसोई के काम के लिए प्रयुक्त होता है। विग्रह में प्रयोजन बताने वाला 'के लिए' संबंध खुलता है और उत्तरपद घर प्रधान है। इसलिए इसे केवल दोनों शब्द जोड़कर या द्वंद्व बताकर नहीं छोड़ना चाहिए।

चरण 2: प्रधानाचार्य का विग्रह प्रधानाचार्य = प्रधान है जो आचार्य। यह कर्मधारय समास है। प्रधान शब्द आचार्य की विशेषता बताता है; दोनों शब्द किसी एक ही व्यक्ति का बोध कराते हैं। अतः यहाँ विशेषण-विशेष्य का संबंध है। इसे 'प्रधान का आचार्य' लिखना अर्थ के अनुकूल नहीं होगा।

चरण 3: यथाशक्ति का विग्रह यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार। यह अव्ययीभाव समास है। यथा पूर्वपद है और पूरा समस्त पद क्रिया की रीति या सीमा बताने वाला अव्यय बनता है। इसका अर्थ अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना है। प्रश्न में किन्हीं दो पदों का निर्देश है; सुविधा के लिए तीनों का विग्रह और समास-नाम दिया गया है।

चरण 4: निष्कर्ष रसोईघर—रसोई के लिए घर, चतुर्थी तत्पुरुष; प्रधानाचार्य—प्रधान है जो आचार्य, कर्मधारय; यथाशक्ति—शक्ति के अनुसार, अव्ययीभाव।

त्वरित सुझाव: हर पद में विग्रह और समास-नाम दोनों लिखें; यथा का अर्थ अनुसार लेकर अव्ययीभाव पहचानें।

11(क). नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं दो के शुद्ध रूप लिखिए :

(i) सप्रसंग-सहित व्याख्या अपेक्षित है।

(ii) मेरे को अभी जाना पड़ेगा।

(iii) केवल दस रुपए मात्र के लिए ऐसी लड़ाई ! [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य-शुद्धि में अनावश्यक पुनरुक्ति हटाई जाती है और सर्वनाम का मानक रूप चुना जाता है।
- एक ही अर्थ देने वाले दो शब्दों का साथ प्रयोग तभी उचित है जब उनसे कोई नया अर्थ स्पष्ट होता हो।

चरण 1: पहले वाक्य की पुनरुक्ति हटाना सप्रसंग का अर्थ ही प्रसंग सहित है। इसलिए सप्रसंग के साथ सहित जोड़ना अनावश्यक है। शुद्ध वाक्य है : सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है। इसका दूसरा स्वीकार्य रूप है : प्रसंग सहित व्याख्या अपेक्षित है। दोनों रूपों में अपेक्षित व्याख्या का वही अर्थ बना रहता है।

चरण 2: दूसरे वाक्य में सर्वनाम सुधारना मेरे को बोलचाल का प्रयोग है। मानक हिंदी में इस स्थान पर मुझे प्रयुक्त होगा। शुद्ध वाक्य है : मुझे अभी जाना पड़ेगा। अभी और जाना पड़ेगा में कोई दोष नहीं है, इसलिए केवल सर्वनाम बदला गया है।

चरण 3: तीसरे वाक्य की पुनरुक्ति हटाना केवल और मात्र दोनों सीमा या अल्पता का बोध कराते हैं। यहाँ किसी एक का प्रयोग पर्याप्त है। शुद्ध वाक्य है : केवल दस रुपए के लिए ऐसी लड़ाई! अन्य स्वीकार्य रूप है : दस रुपए मात्र के लिए ऐसी लड़ाई! विस्मय का भाव सुरक्षित रखा गया है।

चरण 4: निष्कर्ष (i) सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है।

(ii) मुझे अभी जाना पड़ेगा।

(iii) केवल दस रुपए के लिए ऐसी लड़ाई!

त्वरित सुझाव: वाक्य में केवल–मात्र और सप्रसंग–सहित जैसे समानार्थी दुहरे प्रयोग पहचानकर एक अनावश्यक पद हटाएँ।

11(ख). नीचे लिखे वाक्य में यथास्थान सही विराम-चिह्न लगाइए :

राज बोला हे बालक तुम कौन हो कहाँ से आए हो अपने पिता माता गुरु और मित्रों के बारे में बताओ [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वक्ता के परिचय के बाद अल्पविराम और उसके कथन के लिए उद्धरण-चिह्न लगाए जाते हैं।
- संबोधन के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न, प्रश्नों के बाद प्रश्नवाचक चिह्न तथा सूची के पदों के बीच अल्पविराम आते हैं।

चरण 1: कथन और संबोधन पहचानना राज बोला में कथन प्रस्तुत किया गया है। इसके बाद अल्पविराम लगाकर कथन को उद्धरण-चिह्नों में रखा जाएगा। हे बालक संबोधन है; उसके बाद विस्मयादिबोधक चिह्न लगाने से पुकार का भाव स्पष्ट होता है। मूल वाक्य का कोई शब्द नहीं बदला जाएगा।

चरण 2: प्रश्न और सूची अलग करना तुम कौन हो तथा कहाँ से आए हो दो स्वतंत्र प्रश्न हैं, इसलिए दोनों के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न लगेंगे। पिता, माता, गुरु और मित्रों की सूची में पहले पदों के बीच अल्पविराम होंगे। अंतिम निर्देश बताओ पर पूर्णविराम लगेगा और उसके बाद उद्धरण बंद होगा।

चरण 3: निष्कर्ष राज बोला, "हे बालक! तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? अपने पिता, माता, गुरु और मित्रों के बारे में बताओ।"

त्वरित सुझाव: पहले संबोधन, फिर दोनों प्रश्न और अंत में संबंधियों की सूची पहचानें; विराम लगाते समय मूल शब्द सुरक्षित रखें।

---

12. प्रस्तुत अनुच्छेद को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रत्येक क्रियाशीलता आचरण नहीं कहलाती। उठना, बैठना, भोजन करना आदि क्रियाएँ आचरण नहीं है। वास्तव में वह क्रियाशीलता आचरण कहलाती है जिसका सम्बन्ध दूसरे व्यक्ति से होता है। यदि किसी क्रिया से दूसरा व्यक्ति अनुकूल या प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है तो वह क्रिया आचरण बन जाएगी। जैसे किसी व्यक्ति की दुखद अवस्था पर यदि कोई हँसता है तो वह हँसना आचरण बन जाएगा। वैसे सामान्य रूप से हँसना केवल एक क्रिया है। यदि समस्त क्रियाओं को आचरण माना जाए तो पशु और प्रकृति के कार्यों को भी आचरण का विषय मानना होगा और इस प्रकार एक अव्यवस्था हो जाएगी। इसलिए आचरण का सम्बन्ध मूलतः मनुष्य से ही है; क्योंकि वह आत्मचेतन होकर कार्य करता है। [4 अंक]

12(क). उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- यह गद्यांश सामान्य क्रिया और दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करने वाले आचरण का अंतर स्पष्ट करता है।

चरण 1: केंद्रीय विचार पहचानना गद्यांश में उठने, बैठने और भोजन करने जैसी क्रियाओं की तुलना आचरण से की गई है। मुख्य चर्चा यह है कि कोई क्रिया किस स्थिति में आचरण कहलाती है। अतः शीर्षक किसी एक उदाहरण तक सीमित नहीं होना चाहिए।

चरण 2: शीर्षक चुनना आचरण का स्वरूप शीर्षक उसकी परिभाषा, दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव और मनुष्य की आत्मचेतना, तीनों बातों को समेटता है। यह संक्षिप्त भी है और पूरे अनुच्छेद के विषय को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक : आचरण का स्वरूप।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में अनुच्छेद का मुख्य विषय लें; हँसने जैसे उदाहरण को पूरे गद्यांश का विषय न बना दें।

12(ख). आचरण किस क्रिया को कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परिभाषा देते समय गद्यांश में बताई गई आवश्यक शर्त को उत्तर में शामिल करना चाहिए।
- आचरण की पहचान किसी दूसरे व्यक्ति से संबंध और उस पर अनुकूल अथवा प्रतिकूल प्रभाव से होती है।

चरण 1: परिभाषा का आधार ढूँढ़ना लेखक स्पष्ट करता है कि प्रत्येक क्रियाशीलता आचरण नहीं है। उठना, बैठना और भोजन करना अपने आप में सामान्य क्रियाएँ हैं। इसलिए केवल कार्य कर लेना आचरण की पर्याप्त पहचान नहीं है।

चरण 2: आवश्यक शर्त स्पष्ट करना जिस क्रिया का संबंध दूसरे व्यक्ति से हो और जो उसे अनुकूल अथवा प्रतिकूल रूप से प्रभावित करे, वह आचरण है। उदाहरण के लिए, सामान्य हँसना एक क्रिया है, पर किसी की दुखद अवस्था पर हँसना आचरण बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष जिस क्रिया का संबंध दूसरे व्यक्ति से हो तथा जो उसे अनुकूल या प्रतिकूल रूप से प्रभावित करे, उसे आचरण कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में दूसरे व्यक्ति से संबंध और उस पर प्रभाव, दोनों बातें लिखें; केवल क्रियाशीलता कहना अधूरा है।

12(ग). समस्त क्रियाओं को आचरण क्यों नहीं कहा जा सकता ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारण पूछे जाने पर गद्यांश की मुख्य शर्त और उसके न मानने का परिणाम दोनों स्पष्ट किए जाते हैं।
- हर क्रिया दूसरे व्यक्ति को प्रभावित नहीं करती, जबकि आचरण में यह संबंध आवश्यक है।

चरण 1: क्रियाओं की सीमा बताना उठना, बैठना और भोजन करना जैसी सामान्य क्रियाएँ केवल क्रियाशीलता हैं। जब तक किसी क्रिया का दूसरे व्यक्ति से संबंध और उस पर प्रभाव न हो, तब तक उसे आचरण नहीं कहा जा सकता।

चरण 2: सभी क्रियाओं को आचरण मानने का परिणाम लेखक के अनुसार ऐसा करने पर पशुओं तथा प्रकृति के कार्य भी आचरण के अंतर्गत आ जाएँगे। इससे क्रिया और आत्मचेतन मानवीय आचरण का भेद समाप्त होगा और वर्गीकरण में अव्यवस्था पैदा होगी।

चरण 3: निष्कर्ष समस्त क्रियाएँ दूसरे व्यक्ति को प्रभावित नहीं करतीं। सभी को आचरण मानने पर पशु और प्रकृति के कार्य भी उसमें शामिल हो जाएँगे और अव्यवस्था उत्पन्न होगी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव की शर्त बताएँ, फिर पशु और प्रकृति वाले परिणाम से कारण पुष्ट करें।

12(घ). आचरण का सम्बन्ध मनुष्य से ही क्यों है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का अंतिम कथन आचरण और मनुष्य के संबंध का कारण स्पष्ट करता है।
- आत्मचेतना का अर्थ अपने कार्य के प्रति सचेत होकर उसे करना है।

चरण 1: गद्यांश का कारण पहचानना लेखक अंतिम वाक्य में बताता है कि आचरण का संबंध मूलतः मनुष्य से है, क्योंकि वह आत्मचेतन होकर कार्य करता है। उत्तर का आधार यही कथन है; बाहरी मान्यताएँ जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: कारण को संदर्भ से जोड़ना मनुष्य की सचेत क्रिया का संबंध दूसरे व्यक्ति से हो सकता है और उसका उस पर अनुकूल या

प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसी संदर्भ में आचरण का विचार आता है। सामान्य प्राकृतिक कार्यों को इसी कारण आचरण नहीं माना गया है।

चरण 3: निष्कर्ष आचरण का संबंध मूलतः मनुष्य से है, क्योंकि वह आत्मचेतन होकर, अर्थात् अपने कार्य के प्रति सचेत रहकर, कार्य करता है।

त्वरित सुझाव: क्यों पूछने पर अंतिम पंक्ति का क्योंकि वाला कारण पकड़ें और आत्मचेतन शब्द को उत्तर में अवश्य रखें।

13. आपके क्षेत्र में भीषण बाढ़ के कारण मची तबाही और राहत कार्यों की अपर्याप्तता की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए अपने राज्य के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर तुरंत क़दम उठाने का अनुरोध कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुख्यमंत्री को लिखा गया पत्र औपचारिक, तथ्यपरक और स्पष्ट अनुरोध वाला होना चाहिए।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, समस्या, अपेक्षित कार्रवाई और समापन क्रम से आते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय तय करना प्रेषक अपने क्षेत्र का पता लिखेगा। प्राप्तकर्ता के रूप में मुख्यमंत्री और राज्य सरकार का पता आएगा। विषय में भीषण बाढ़ से हुई तबाही तथा अपर्याप्त राहत का उल्लेख होगा। विनम्र संबोधन के बाद समस्या का विवरण और तत्काल उपाय लिखे जाएँगे।

चरण 2: विषय-वस्तु की योजना पहले जलमग्न बस्तियों, घरों और फसलों की क्षति का वर्णन करें। फिर भोजन, शुद्ध जल, दवाइयों और आश्रय की कमी बताएँ। अंत में बचाव दल, राहत सामग्री, स्वास्थ्य शिविर, अस्थायी आवास और निष्पक्ष सहायता-वितरण की माँग रखें। पत्र का स्वर शालीन हो तथा अनुरोध कार्यवाही योग्य हो।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र ग्राम रामपुर, जिला पटना

बिहार

दिनांक : 20 मार्च 2004

सेवा में,

माननीय मुख्यमंत्री महोदय,

बिहार सरकार, पटना।

विषय : बाढ़ से हुई तबाही तथा अपर्याप्त राहत के संबंध में तत्काल कार्रवाई का अनुरोध।

महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र में भीषण बाढ़ से उत्पन्न गंभीर स्थिति की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। लगातार वर्षा तथा नदी का जलस्तर बढ़ने से अनेक बस्तियाँ जलमग्न हो गई हैं। कच्चे मकान गिर गए हैं और फसलें नष्ट हो गई हैं। सड़कें टूटने से कई गाँवों का संपर्क कट गया है। अनेक परिवार सुरक्षित स्थानों पर खुले में रहने को विवश हैं।

राहत कार्य अभी आवश्यकता की तुलना में बहुत कम हैं। भोजन और शुद्ध पेयजल की भारी कमी है। उपलब्ध नावें सभी प्रभावित परिवारों तक नहीं पहुँच पा रही हैं। बच्चों, वृद्धों और बीमार लोगों को विशेष कठिनाई हो रही है। गंदे पानी तथा सफाई के अभाव में बीमारियाँ फैलने की आशंका है, किंतु दवाइयाँ और चिकित्सा सुविधाएँ पर्याप्त नहीं हैं।

आपसे अनुरोध है कि अतिरिक्त बचाव दल और नावें तत्काल भेजी जाएँ। राहत शिविरों में भोजन, पेयजल, कपड़े तथा आवश्यक दवाइयाँ उपलब्ध कराई जाएँ। चलित चिकित्सा दल तैनात किए जाएँ और अस्थायी शौचालयों की व्यवस्था की जाए। जिला प्रशासन को नियमित निरीक्षण तथा निष्पक्ष राहत-वितरण के निर्देश दिए जाएँ। क्षति का सर्वेक्षण कर प्रभावित परिवारों को आर्थिक सहायता और पुनर्वास की सुविधा भी प्रदान की जाए।

आशा है कि आप इस गंभीर परिस्थिति में तत्काल प्रभावी कदम उठाकर बाढ़-पीड़ितों को राहत पहुँचाएँगे।

भवदीय,

अमित कुमार
क्षेत्र का एक निवासी।

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में बाढ़ की तबाही और अपर्याप्त राहत की स्थिति स्पष्ट करते हुए मुख्यमंत्री से तत्काल बचाव, भोजन, चिकित्सा, आश्रय और पुनर्वास की व्यवस्था का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: औपचारिक पत्र में समस्या बताने के बाद स्पष्ट उपाय माँगें और विषय, संबोधन तथा हस्ताक्षर का क्रम न भूलें।

अथवा

13. समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और दूरदर्शन में प्रदर्शित अश्लील विज्ञापनों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र में किसी सार्वजनिक समस्या का संतुलित विवेचन और उसके व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए जाते हैं।
- प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन और समापन औपचारिक पत्र के आवश्यक अंग हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय-वस्तु की योजना पत्र में पहले विज्ञापनों की समस्या बताई जाएगी, फिर बच्चों और सामाजिक दृष्टि पर उसके प्रभाव का उल्लेख होगा। अंत में संपादक से जनमत बनाने और विज्ञापनदाताओं से उत्तरदायी प्रस्तुति अपनाने का आग्रह किया जाएगा। भाषा शिष्ट, स्पष्ट और तथ्यपरक रहेगी।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली
20 मार्च, 2004
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण, नई दिल्ली
विषय : जनसंचार माध्यमों में अश्लील विज्ञापनों पर रोक लगाने का अनुरोध।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और दूरदर्शन में प्रदर्शित अश्लील विज्ञापनों की ओर संबंधित संस्थाओं का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। अनेक विज्ञापनों में उत्पाद की उपयोगिता बताने के स्थान पर अनावश्यक उत्तेजक दृश्य और द्विअर्थी संवाद प्रस्तुत किए जाते हैं। इससे परिवार के साथ कार्यक्रम देखना भी असहज हो जाता है।
बच्चे और किशोर ऐसे विज्ञापनों से विशेष रूप से प्रभावित होते हैं। स्त्री को केवल आकर्षण की वस्तु के रूप में प्रस्तुत करना उसकी गरिमा के विरुद्ध है। विज्ञापन रचनात्मक और प्रभावी हो सकता है; उसके लिए अश्लीलता आवश्यक नहीं है।
विज्ञापनदाताओं और प्रसारकों को सामग्री प्रसारित करने से पहले उसकी शालीनता की जाँच करनी चाहिए। संबंधित नियामक संस्थाएँ शिकायतों पर शीघ्र कार्रवाई करें और दर्शकों के लिए सरल शिकायत व्यवस्था उपलब्ध कराएँ। अभिभावकों को भी बच्चों से विज्ञापनों के संदेशों पर विवेकपूर्ण चर्चा करनी चाहिए।
कृपया इस विषय पर संपादकीय प्रकाशित कर स्वस्थ जनमत बनाने में सहयोग दें। आशा है कि आपका समाचार-पत्र विज्ञापनों के चयन में सामाजिक उत्तरदायित्व का उदाहरण प्रस्तुत करेगा।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार

चरण 3: निष्कर्ष यह पत्र समस्या, उसके प्रभाव और सुधार के सुझावों को औपचारिक एवं शिष्ट रूप में संपादक के सामने रखता है।

त्वरित सुझाव: संपादक को लिखते समय समस्या के बाद ठोस सुझाव दें और अंत में प्रकाशन अथवा जनमत निर्माण का स्पष्ट आग्रह करें।

14(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(क) कामकाजी नारी और उसकी समस्याएँ [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का परिचय, समस्याओं का क्रमबद्ध विश्लेषण और समाधान सहित उपसंहार होना चाहिए।
- स्त्री का रोजगार आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक भागीदारी से जुड़ा है; उसकी चुनौतियों का समाधान परिवार तथा समाज की साझी जिम्मेदारी है।

चरण 1: निबंध की रूपरेखा भूमिका में कामकाजी नारी के योगदान का परिचय दें। मुख्य भाग में दोहरे दायित्व, असमान अवसर, सुरक्षा, यात्रा और बच्चों की देखभाल की समस्याएँ समझाएँ। समाधान में घरेलू श्रम का बँटवारा, समान अवसर और कार्यस्थल की संवेदनशील व्यवस्था रखें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध कामकाजी नारी और उसकी समस्याएँ

आज की नारी घर की सीमाओं से आगे बढ़कर शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन, उद्योग और विज्ञान जैसे अनेक क्षेत्रों में अपनी योग्यता सिद्ध कर रही है। उसका काम केवल परिवार की आय बढ़ाना नहीं, बल्कि अपनी प्रतिभा का विकास करना और समाज के निर्माण में योगदान देना भी है। आर्थिक आत्मनिर्भरता से उसका आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।

फिर भी कामकाजी नारी का जीवन अनेक कठिनाइयों से घिरा है। कार्यालय से लौटने के बाद घर का अधिकांश काम प्रायः उसी की जिम्मेदारी मान लिया जाता है। बच्चों की पढ़ाई, बुजुर्गों की देखभाल और भोजन की व्यवस्था करते हुए उसे अपने विश्राम के लिए समय नहीं मिलता। इस दोहरे दायित्व से शारीरिक थकान और मानसिक तनाव बढ़ते हैं।

कार्यस्थल पर भी उसे कभी अपनी योग्यता सिद्ध करने के लिए अधिक संघर्ष करना पड़ता है। वेतन, पदोन्नति और नेतृत्व के अवसरों में भेदभाव उसकी प्रगति रोक सकता है। असम्मानजनक व्यवहार तथा असुरक्षित वातावरण उसकी चिंता बढ़ाते हैं। लंबी यात्रा, भीड़भाड़ और देर से लौटने की विवशता अतिरिक्त कठिनाइयाँ पैदा करती हैं। छोटे बच्चों के लिए विश्वसनीय देखभाल की सुविधा न होने पर उसका तनाव और बढ़ जाता है।

इन समस्याओं का समाधान स्त्री को रोजगार छोड़ने की सलाह देना नहीं है। परिवार के सभी सदस्यों को घरेलू कार्यों में सहयोग करना चाहिए। बच्चों को बचपन से समानता और पारस्परिक सम्मान की शिक्षा मिले। कार्यस्थलों पर सुरक्षित वातावरण, निष्पक्ष अवसर, शिकायतों की प्रभावी सुनवाई तथा आवश्यक अवकाश की व्यवस्था हो। उचित बाल-देखभाल केंद्र और सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन भी उपयोगी हैं।

कामकाजी नारी दया की नहीं, सम्मान और सहयोग की अधिकारी है। जब परिवार, संस्थाएँ और समाज उसके श्रम का उचित मूल्य समझेंगे, तभी उसकी क्षमताओं का पूरा विकास होगा। नारी की उन्नति से परिवार और राष्ट्र दोनों समृद्ध होंगे।

चरण 3: निष्कर्ष कामकाजी नारी की समस्याओं का स्थायी समाधान समान अवसर, सुरक्षित वातावरण और पारिवारिक सहयोग से संभव है।

त्वरित सुझाव: लगभग 300 शब्दों के निबंध में समस्याओं के साथ उनके समाधान भी लिखें; प्रत्येक अनुच्छेद का केंद्रीय विचार अलग रखें।

14(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(ख) सबसे न्यारा देश हमारा [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- देशप्रेम पर निबंध में भावनात्मक लगाव के साथ देश की विविधता, सांस्कृतिक विरासत और नागरिक कर्तव्यों का विवेचन किया जाता है।
- प्रभावी निबंध में प्रकृति, संस्कृति और राष्ट्रीय एकता के ठोस उदाहरण विचारों को स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: विचारों का क्रम प्रकृति की विविधता से आरंभ करके भाषाओं, पर्वों और सांस्कृतिक परंपराओं का वर्णन करें। स्वतंत्रता-संघर्ष और लोकतांत्रिक मूल्यों का उल्लेख करने के बाद देश की चुनौतियों के प्रति नागरिक दायित्व स्पष्ट करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध सबसे न्यारा देश हमारा

भारत हमारा प्यारा देश है। इसकी धरती पर जन्म लेना हमें अपनी समृद्ध विरासत से जोड़ता है। हिमालय की ऊँची चोटियाँ, विस्तृत मैदान, घने वन, मरुस्थल और समुद्रतट इसकी प्राकृतिक विविधता को अद्भुत बनाते हैं। गंगा, यमुना और अनेक दूसरी नदियाँ खेतों को सींचती हैं तथा लोगों के जीवन को सहारा देती हैं। ऋतुओं के बदलते रंग इस भूमि को नया सौंदर्य देते रहते हैं।

हमारे देश की विशेषता उसकी सांस्कृतिक बहुलता है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं और विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। भोजन, पहनावे, संगीत और नृत्य की भिन्न परंपराएँ हमारी सामूहिक संस्कृति को समृद्ध करती हैं। दीपावली, ईद, क्रिसमस, गुरुपर्व और अन्य उत्सव मिलकर मनाने से आपसी सद्भाव बढ़ता है। भिन्नताओं के बीच साथ रहने की भावना ही हमारी बड़ी शक्ति है।

भारत की ज्ञान-परंपरा भी गौरवपूर्ण है। साहित्य, दर्शन, गणित और कला के क्षेत्र में यहाँ महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। संतों और समाज-सुधारकों ने प्रेम, करुणा तथा समानता का संदेश दिया। स्वतंत्रता-संग्राम में विभिन्न प्रदेशों और समुदायों के लोगों ने मिलकर संघर्ष किया। उनके त्याग से हमें स्वतंत्र जीवन मिला। हमारा संविधान सभी नागरिकों को समान गरिमा देता है और लोकतंत्र में भाग लेने का अवसर प्रदान करता है।

देश से प्रेम करने का अर्थ केवल उसकी प्रशंसा करना नहीं है। गरीबी, अशिक्षा, भेदभाव और प्रदूषण जैसी समस्याओं को दूर करने में योगदान देना भी देशभक्ति है। हमें ईमानदारी से काम करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। स्वच्छता, शिक्षा तथा पर्यावरण-संरक्षण के छोटे प्रयास भी बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

हमारा देश अपनी विविधता, सहिष्णुता और मिल-जुलकर आगे बढ़ने की क्षमता के कारण न्यारा है। यदि हम एकता बनाए रखें और कर्तव्यों का पालन करें, तो भारत को अधिक न्यायपूर्ण, सुंदर और समृद्ध बना सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भारत की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विविधता उसकी पहचान है; उसकी श्रेष्ठता बनाए रखना हर नागरिक का दायित्व है।

त्वरित सुझाव: देशप्रेम के निबंध में केवल प्रशंसा न करें; विविधता के उदाहरण और देश को बेहतर बनाने वाले नागरिक कर्तव्य भी जोड़ें।

14(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(ग) राजनीति और अपराध-जगत् [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय की स्पष्ट व्याख्या, विचारों का क्रम और सार्थक निष्कर्ष आवश्यक हैं।
- भाषा सरल, मानक और प्रभावपूर्ण रखें; उदाहरण विषय से जुड़े हों तथा विचार संतुलित रहें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति भूमिका में लोकतंत्र का उद्देश्य लिखें; मुख्य भाग में कारण, दुष्परिणाम और समाधान रखें। निबंध का उपयुक्त शीर्षक दें और विचारों को परस्पर जुड़े अनुच्छेदों में विकसित करें। लगभग 300 शब्दों की सीमा का ध्यान रखें।

चरण 2: आदर्श निबंध राजनीति और अपराध-जगत्

लोकतंत्र का आधार जनविश्वास है। राजनीति का उद्देश्य जनकल्याण, न्याय और व्यवस्था की स्थापना होना चाहिए। इसके विपरीत अपराध-जगत् भय, हिंसा और अवैध लाभ पर चलता है। जब दोनों का गठजोड़ होता है, तब लोकतांत्रिक संस्थाएँ कमजोर पड़ती हैं और सामान्य नागरिक का विश्वास टूटता है।

राजनीति में अपराधी तत्त्वों के प्रवेश के कई कारण हैं। महँगे चुनाव, धनबल और बाहुबल का प्रभाव तथा जातीय या स्थानीय निष्ठाओं का दुरुपयोग ऐसे लोगों को अवसर देते हैं। कुछ राजनीतिक व्यक्तियों को चुनावी सहायता चाहिए, जबकि अपराधियों को संरक्षण और प्रतिष्ठा चाहिए। यही स्वार्थपूर्ण संबंध प्रशासन पर अनुचित दबाव डालता है। फलतः कानून सबके लिए समान रहने के बजाय प्रभावशाली लोगों के सामने असहाय दिखाई देने लगता है।

इस गठजोड़ का सबसे अधिक नुकसान गरीब और निर्बल वर्ग को होता है। शिकायत करने वाला व्यक्ति धमकियों से डरता है और ईमानदार अधिकारी स्वतंत्र निर्णय लेने में कठिनाई अनुभव करता है। सार्वजनिक धन विकास के स्थान पर निजी हितों में लग सकता है। योग्य तथा सेवाभावी लोग भी राजनीति से दूर होने लगते हैं। इससे लोकतंत्र में प्रतिनिधित्व और उत्तरदायित्व दोनों प्रभावित होते हैं।

समाधान केवल कठोर दंड में नहीं, बल्कि पारदर्शी और निष्पक्ष व्यवस्था में है। राजनीतिक दलों को उम्मीदवार चुनते समय चरित्र तथा सार्वजनिक सेवा को महत्त्व देना चाहिए। चुनावी खर्च और चंदे की जानकारी स्पष्ट होनी चाहिए। पुलिस को अनुचित दबाव से मुक्त रखना और मुकदमों का समय पर निपटारा करना आवश्यक है। साथ ही, आरोप लगने और अपराध सिद्ध होने के अंतर का सम्मान होना चाहिए, ताकि न्याय निष्पक्ष रहे।

मतदाता की भूमिका भी निर्णायक है। उसे जाति, भय और प्रलोभन से ऊपर उठकर उम्मीदवार की योग्यता तथा आचरण देखना चाहिए। जागरूक नागरिक, स्वतंत्र संस्थाएँ और उत्तरदायी राजनीतिक दल मिलकर ही राजनीति को अपराध के प्रभाव से मुक्त कर सकते हैं। स्वच्छ राजनीति स्वस्थ लोकतंत्र की अनिवार्य शर्त है।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबंध में भूमिका, विषय का विवेचन और निष्कर्ष क्रमबद्ध रूप में दिए गए हैं। मूल विचार को केंद्र में रखते हुए संतुलित भाषा में अपनी बात प्रस्तुत करना उपयुक्त है।

त्वरित सुझाव: भूमिका में लोकतंत्र का उद्देश्य लिखें; मुख्य भाग में कारण, दुष्परिणाम और समाधान रखें। निष्कर्ष में मुख्य संदेश रखें और कोई नया विषय आरंभ न करें।

14(घ). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(घ) ग्रामीण जीवन [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय की स्पष्ट व्याख्या, विचारों का क्रम और सार्थक निष्कर्ष आवश्यक हैं।
- भाषा सरल, मानक और प्रभावपूर्ण रखें; उदाहरण विषय से जुड़े हों तथा विचार संतुलित रहें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति प्रकृति और सामुदायिकता के बाद शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सुधारों का संतुलित विवेचन करें। निबंध का उपयुक्त शीर्षक दें और विचारों को परस्पर जुड़े अनुच्छेदों में विकसित करें। लगभग 300 शब्दों की सीमा का ध्यान रखें।

चरण 2: आदर्श निबंध ग्रामीण जीवन

भारत का ग्रामीण जीवन देश की संस्कृति, श्रम और सामुदायिक संबंधों का महत्त्वपूर्ण आधार है। गाँव केवल खेतों और कच्ची पगडंडियों का नाम नहीं है; वह अनेक परिवारों की आशाओं, परंपराओं और आजीविका का संसार है। ग्रामीण जीवन को समझने के लिए उसकी सुंदरता के साथ उसकी कठिनाइयों को भी देखना आवश्यक है।

गाँव में प्रकृति से निकटता जीवन की विशेष पहचान है। खेतों की हरियाली, ऋतुओं का परिवर्तन, पशुओं की देखभाल और कृषि-कार्य दैनिक जीवन की लय बनाते हैं। किसान का परिश्रम पूरे समाज को अन्न देता है। बुवाई और कटाई के अवसरों पर श्रम का सामूहिक रूप दिखाई देता है। त्योहार, लोकगीत, मेले और पारिवारिक संस्कार सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखते हैं। पड़ोसी प्रायः सुख-दुख में एक-दूसरे के सहायक होते हैं।

किन्तु ग्रामीण जीवन को केवल सुखद चित्र मान लेना उचित नहीं होगा। अनेक स्थानों पर पर्याप्त सिंचाई, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य-सेवा और यातायात की कमी है। कृषि की आय मौसम और बाजार पर निर्भर रहती है। रोजगार के सीमित साधनों के कारण युवाओं को शहरों की ओर जाना पड़ता है। सामाजिक भेदभाव, रूढ़ियाँ और महिलाओं के लिए असमान अवसर भी विकास में बाधा बन सकते हैं।

इन समस्याओं के समाधान के लिए गाँवों का संतुलित विकास आवश्यक है। अच्छे विद्यालय, प्रशिक्षित शिक्षक, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और स्वच्छ पेयजल प्रत्येक परिवार तक पहुँचने चाहिए। खेती के साथ छोटे उद्योग, पशुपालन और स्थानीय हस्तशिल्प को बढ़ावा मिलना चाहिए। बेहतर भंडारण तथा बाजार तक सीधी पहुँच किसानों की स्थिति सुधार सकते हैं। ग्रामसभा में महिलाओं और वंचित वर्गों की सक्रिय भागीदारी भी जरूरी है।

ग्रामीण विकास का अर्थ गाँव को शहर की नकल बना देना नहीं है। उसकी आत्मीयता, पर्यावरण और स्थानीय ज्ञान को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना सही दिशा है। जब गाँव शिक्षित, स्वस्थ और आत्मनिर्भर होंगे, तभी देश की प्रगति व्यापक तथा टिकाऊ बनेगी।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबंध में भूमिका, विषय का विवेचन और निष्कर्ष क्रमबद्ध रूप में दिए गए हैं। मूल विचार को केंद्र में रखते हुए संतुलित भाषा में अपनी बात प्रस्तुत करना उपयुक्त है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति और सामुदायिकता के बाद शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सुधारों का संतुलित विवेचन करें। निष्कर्ष में मुख्य संदेश रखें और कोई नया विषय आरंभ न करें।

14(ङ). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(ङ) जब आवै संतोष-धन, सब धन धूरि समान [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय की स्पष्ट व्याख्या, विचारों का क्रम और सार्थक निष्कर्ष आवश्यक हैं।
- भाषा सरल, मानक और प्रभावपूर्ण रखें; उदाहरण विषय से जुड़े हों तथा विचार संतुलित रहें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति संतोष की व्याख्या के साथ लोभ के परिणाम लिखें और स्पष्ट करें कि संतोष परिश्रम का विरोधी नहीं है। निबंध का उपयुक्त शीर्षक दें और विचारों को परस्पर जुड़े अनुच्छेदों में विकसित करें। लगभग 300 शब्दों की सीमा का ध्यान रखें।

चरण 2: आदर्श निबंध जब आवै संतोष-धन, सब धन धूरि समान

मनुष्य जीवन भर सुख की खोज करता है। वह प्रायः मान लेता है कि अधिक धन और अधिक वस्तुएँ मिलने पर उसकी सभी इच्छाएँ समाप्त हो जाएँगी। किंतु इच्छाओं की कोई निश्चित सीमा नहीं होती। इसी सत्य को यह उक्ति व्यक्त करती है कि संतोष रूपी धन प्राप्त हो जाए, तो अन्य धन का आकर्षण धूल के समान तुच्छ लगने लगता है।

संतोष का अर्थ उपलब्ध साधनों के प्रति कृतज्ञ रहना और अनावश्यक तुलना से बचना है। जिसके मन में संतोष है, वह अपनी आवश्यकताओं तथा इच्छाओं का अंतर समझता है। वह दूसरों की सफलता देखकर ईर्ष्या करने के बजाय अपने श्रम और प्रगति पर ध्यान देता है। साधारण भोजन, पारिवारिक स्नेह और ईमानदारी से अर्जित आय भी उसे आनंद दे सकती है। इसके विपरीत असंतुष्ट व्यक्ति संपन्न होकर भी अभाव का अनुभव करता रहता है।

अत्यधिक लोभ अनेक बुराइयों का कारण बनता है। अधिक पाने की अंधी दौड़ मनुष्य को छल, भ्रष्टाचार और अन्याय की ओर ले जा सकती है। प्रतिस्पर्धा जब दिखावे में बदल जाती है, तब संबंधों की आत्मीयता और मन की शांति घटती है। संतोष व्यक्ति को संयम सिखाता है और उसे दूसरों के अधिकारों का सम्मान करने में सहायता देता है।

फिर भी संतोष को आलस्य या निष्क्रियता नहीं समझना चाहिए। अन्याय सहते रहना अथवा शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन की आवश्यकता को दबा देना संतोष नहीं है। मनुष्य को मेहनत करनी चाहिए, अपनी प्रतिभा बढ़ानी चाहिए और परिस्थितियाँ सुधारनी चाहिए। अंतर इतना है कि उसकी प्रगति नैतिक साधनों से हो और वह सफलता का मूल्य केवल धन में न मापे।

संतोष का अभ्यास छोटी आदतों से संभव है। अपनी उपलब्धियों को पहचानना, अनावश्यक खर्च घटाना, जरूरतमंद की सहायता करना और परिवार के साथ समय बिताना उपयोगी उपाय हैं। धन जीवन का आवश्यक साधन है, पर अंतिम लक्ष्य नहीं। संतोष उसे उचित स्थान देता है और जीवन को शांति, उदारता तथा सच्चे सुख से समृद्ध बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबंध में भूमिका, विषय का विवेचन और निष्कर्ष क्रमबद्ध रूप में दिए गए हैं। मूल विचार को केंद्र में रखते हुए संतुलित भाषा में अपनी बात प्रस्तुत करना उपयुक्त है।

त्वरित सुझाव: संतोष की व्याख्या के साथ लोभ के परिणाम लिखें और स्पष्ट करें कि संतोष परिश्रम का विरोधी नहीं है। निष्कर्ष में मुख्य संदेश रखें और कोई नया विषय आरंभ न करें।